नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 352, नई दिल्ली, शुक्रवार 20 फरवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जिस इंसान के पास आशा होती है, वह कभी पराजित नहीं होता है!

03 शिवजी के अनन्य भक्त: भृंगी और उनके तीन पैरों का रहस्य एक अद्भुत कथा!
06 भारतीय ज्ञान परंपरा और विज्ञान शिक्षा : सोच-समझकर आगे बढ़ने की आवश्यकता
08 कांग्रेस ने पूर्व मंत्री एवं उनके पत्नी की गिरफ्तारी पर पुलिस की आलोचना की

दिल्ली परिवहन आयुक्त की चाणक्य नीति:

ई-रिक्शा पंजीकरण अपने आप बंद

संजय कुमार बाठला

दिल्ली की सड़कों पर सार्वजनिक परिवहन की बदहाली जगजाहिर है। जनता गंतव्य से गंतव्य तक सुरक्षित, समयबद्ध सेवा के अभाव में निजी वाहनों पर निर्भर हो रही है, जिससे जाम, दुर्घटनाएं और प्रदूषण बढ़ रहा है।

ई-रिक्शा पंजीकरण पर अनौपचारिक रोक ने अवैध वाहनों की संख्या और बढ़ाने का खतरा पैदा कर दिया है।

सार्वजनिक परिवहन का संकट

दिल्ली, राष्ट्र की राजधानी होने के बावजूद, सार्वजनिक सवारी सेवा में शून्यता का शिकार है।

सड़कों पर अवैध वाहनों का बोलबाला है, जो निजीकरण, ट्रैफिक जाम, दुर्घटनाओं और वायु प्रदूषण का मुख्य कारण बने हुए हैं।

जनता का समय और धन बर्बाद हो रहा है, जबकि ई-रिक्शा जैसे पर्यावरण - अनुकूल विकल्प व्यवस्था के अभाव में अवैध हो रहे हैं।

पंजीकरण प्रक्रिया में अनियमितताएं परिवहन विभाग की शाखाओं ने चालक लाइसेंस के बिना ई-रिक्शा पंजीकृत किए, जबकि यह अनिवार्य दस्तावेज है।

विजिलेंस शाखा ने शिकायत पर जांच शुरू की और सभी पंजीकृत फाइलें मंगवाईं, जिसके बाद बिना किसी औपचारिक आदेश के पंजीकरण ठप हो गया।

एक ही लाइसेंस पर कई ई-रिक्शा पंजीकृत पाए गए, जो एसओपी का स्पष्ट उल्लंघन है।

लाइसेंस प्राप्ति के अवरोध ई-रिक्शा चालक लाइसेंस के लिए दिल्ली पुलिस का सीबीसी (चरित्र प्रमाण पत्र) अनिवार्य है, जो ऑनलाइन सेवा कई महीनों से बंद पड़ी है। डीटीसी (चालक प्रशिक्षण प्रमाण पत्र) के लिए मान्यता प्राप्त निर्माताओं को अपलोड पोर्टल उपलब्ध नहीं है। इनके अभाव में कानूनी पंजीकरण असंभव हो गया है।

कानूनी व प्रशासनिक प्रश्न

परिवहन विभाग की स्वयं की पंजीकरण शाखाओं ने एसओपी दरकिनार कर पंजीकरण कैसे किए?

विजिलेंस जांच से बिना आदेश के बंदी कैसे?

उच्च न्यायालय के आदेश और उपराज्यपाल की राजपत्रित अधिसूचना के अनुसार बिना पंजीकरण ई-रिक्शा प्रतिबंधित हैं, लेकिन वैध प्रक्रिया के अभाव में अनुपालन कैसे?

3 पहिया 3-सवारी ई- आटो पर सुप्रीम कोर्ट का हवाला देकर पंजीकरण पर रोक और 3 पहिया 6- सवारी पर परिवहन आयुक्त का हवाला देकर रोक।

प्रदूषण मुक्ति का विरोधाभास

परिवहन विभाग स्वयं व्यावसायिक सार्वजनिक सवारी सेवा के लिए उपलब्ध ई-वाहनों के पंजीकरण रोक रहा है, फिर प्रदूषण-मुक्त दिल्ली का दावा कैसे?

अवैध ई-रिक्शा बढ़ने से सड़क सुरक्षा, यातायात और पर्यावरण खतरे में है। सरकार को तत्काल पोर्टल सक्रिय कर प्रक्रिया सुगम बनानी चाहिए।

जनहित में मांग:

दिल्ली पुलिस सीवीसी सेवा तत्काल बहाल करे,

परिवहन विभाग डीटीसी अपलोड करने का पोर्टल वाहन पर तत्काल चालू करे।

मुख्य बिंदु

1. चालक चरित्र प्रमाण पत्र और परिवहन विभाग के वाहन पोर्टल पर चालक प्रशिक्षण प्रमाणपत्र अपलोड ना होने के कारण ई-रिक्शा पंजीकरण बंद
2. रोजगार के नाम पर हजारों चालकों द्वारा अवैध संचालन,
3. पंजीकरण प्रक्रिया ठप होने से नए ई-रिक्शा उपलब्ध नहीं और अवैध वाहनों की गिनती में बढ़ोतरी,
4. सीवीसी/डीटीसी सेवाओं के अभाव में लाइसेंस संभव नहीं।
5. ट्रैफिक पुलिस ने 15,000+ बिना पंजीकरण वाले ई-रिक्शा जब्त किए, कारण स्वयं दिल्ली परिवहन विभाग और दिल्ली पुलिस,
6. नाबालिग चालक और बिना व्यावसायिक लाइसेंस, हादसे व जाम बढ़े।

जिम्मेदार कौन ?

दिल्ली ट्रैफिक पुलिस का मैसेज: "रोड सेफ्टी सबकी ज़िम्मेदारी है – नियमों का पालन करें, जान बचाएं।"

स्वतंत्र सिंह भुल्लर नई दिल्ली

नई दिल्ली: दिल्ली पुलिस वीक (16–22 फरवरी 2026) के मौके पर, दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने पूरे देश में कम्युनिटी की भागीदारी, रोड सेफ्टी अवेयरनेस और पब्लिक वेलफेयर पर फोकस करते हुए कई असरदार प्रोग्राम किए। हफ्ते भर चलने वाली इन कोशिशों ने डिपार्टमेंट के एक सुरक्षित और डिसिप्लिन्ड ट्रैफिक सिस्टम को बढ़ावा देने, रोड सेफ्टी के बारे में अवेयरनेस फैलाने और लोगों के साथ कम्युनिकेशन को मजबूत करने के लगातार कमिटमेंट को हाईलाइट किया। एडिशनल कमिश्नर ऑफ पुलिस (ट्रैफिक) सत्यवीर कटारा के गाइडेंस और सुपरविजन में, दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने सुरक्षित सड़कें बनाने और जिम्मेदार ट्रैफिक बिहेवियर को बढ़ावा देने के अपने इरादे को फिर से पक्का किया।

पुलिस परिवारों की भलाई के हिस्से के तौर पर, पुलिस ट्रेनिंग स्कूल मालवीय नगर में एक खास प्रोग्राम हुआ, जहां दिल्ली पुलिस के जवानों के परिवार वालों को इमरजेंसी हेल्थ सिचुएशन के लिए जान बचाने वाले स्किल्स सिखाने के लिए CPR (कार्डियो-पल्मोनरी रिससिटेशन) ट्रेनिंग दी गई। इसके साथ ही, रोड सेफ्टी पर एक दिलचस्प स्ट्रीट प्ले पेश किया गया, जिसमें ट्रैफिक नियमों का पालन करने, सड़क पर सुरक्षित व्यवहार और ज़िम्मेदार नागरिक होने के मैसेज मज़ेदार तरीके से दिए गए। 135 से ज़्यादा परिवार के सदस्यों और बच्चों ने जोश के साथ हिस्सा लिया, जिससे यह इवेंट जानकारी भरा और यादगार बन गया।

भविष्य के ज़िम्मेदार नागरिक तैयार करने के लिए, स्कूलों में खास जागरूकता अभियान भी चलाए गए। MCD प्राइमरी स्कूल दयालपुर और लवली विस्टा स्कूल निर्माण विहार में हुए प्रोग्राम में लगभग 273 स्टूडेंट्स और 14 टीचरों ने सक्रिय रूप से हिस्सा लिया। इंटरैक्टिव सेशन में ट्रैफिक साइन और सिग्नल, पैदल चलने वालों की सुरक्षा, हेलमेट और सीट बेल्ट का महत्व और सुरक्षित सड़क पर चलने के तरीकों पर डेमोंस्ट्रेशन शामिल थे। एक रोड सेफ्टी क्विज़ कॉम्पिटिशन भी आयोजित किया गया, जिसमें स्टूडेंट्स ने उत्साह से हिस्सा लिया, सवाल पूछे और ज़िम्मेदार ट्रैफिक व्यवहार पर अपने विचार शेयर किए।

लोगों तक पहुंच को मज़बूत करने के लिए, राजा हरिश्चंद्र चौक नरेला, द्वारका सेक्टर-1 रेड लाइट, पुलिस ट्रेनिंग स्कूल मालवीय नगर और लाडो सराय जैसे बड़े ट्रैफिक चौराहों पर ज़मीनी जागरूकता अभियान चलाए गए। इन कैंपेन के दौरान, ट्रैफिक अधिकारियों ने 13,300 से ज़्यादा सड़क इस्तेमाल करने वालों से सीधे बात की, जिनमें पैदल चलने वाले, साइकिल चलाने वाले, दोपहिया वाहन चलाने वाले और ड्राइवर शामिल थे। ट्रैफिक सिग्नल मानने, लेन डिसिप्लिन, हेलमेट और सीट बेल्ट का ज़रूरी इस्तेमाल, गाड़ी चलाते समय मोबाइल फोन का इस्तेमाल न करने और सड़क पर शिष्टाचार के महत्व को बताने वाले पैम्फलेट बांटे गए। इन कोशिशों से लोगों में जागरूकता काफी बढ़ी और ज़िम्मेदारी से गाड़ी चलाने को बढ़ावा मिला।

दिल्ली पुलिस वीक 2026 के तहत इन कोशिशों के ज़रिए, दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने लोगों की भलाई और जागरूकता के लिए अपना कमिटमेंट दिखाया। लगातार कोशिशों से, डिपार्टमेंट सभी नागरिकों के लिए सुरक्षित सड़कें, बेहतर ट्रैफिक डिसिप्लिन और सुरक्षित और नियमों का पालन करने वाला ट्रैफिक माहौल पक्का करने के लिए डेडिकेटेड है।

मादीपुर विधानसभा में कूड़ा घर का विरोध: जनता का सशक्त संघर्ष

- मादीपुर विधानसभा में कूड़ा घर का विरोध: जनता का सशक्त संघर्ष
- शहीद भगत सिंह कालोनी में नया कूड़ा घर बनाने की कोशिश पर भारी विरोध, एमसीडी कर्मचारी लौटे

संजय कुमार बाठला

पश्चिमी दिल्ली के मादीपुर विधानसभा के वार्ड 92 में शहीद भगत सिंह कालोनी में कूड़ाघर को लेकर स्थानीय निवासियों का आक्रोश आज भड़क उठा।

दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) के पश्चिमी क्षेत्र के अधिकारियों द्वारा आश्वासन दिए जाने के बावजूद पुराना कूड़ाघर हटाया नहीं गया और अब उसी स्थान पर नया पक्का कूड़ाघर जिसमें कूड़े से खाद बनाने वाली मशीन लगाने की योजना है, बनाने का टेंडर पास कर दिया।

रिहायशी क्षेत्र में कूड़े से खाद बनाने की योजना किसी भी नियम, कानून के तहत दिल्ली सरकार, दिल्ली नगर निगम रिहायशी क्षेत्र में खुला कूड़ा घर तक नहीं बना सकती और मादीपुर विधानसभा क्षेत्र वार्ड 92 शहीद भगत सिंह कालोनी में मुख्य सड़क पर कूड़े से खाद बनाने का टेंडर पास करना सीधे सीधे निगम पार्षद, निगम अधिकारियों पर गैर कानूनी कार्रवाई में लिप्त होने के संकेत देते है।

आपकी जानकारी के लिए याद करवा दे की इस वार्ड की निगम पार्षद और उनके पति के खिलाफ पहले भी कई बाते उठ चुकी है और उनका बोलना की अगले चुनाव में यह वार्ड उनके क्षेत्र मे नहीं आता तो यहां कोई विकास का कार्य क्यों करवाए, जो यह सिद्ध करता है की इस टेंडर के पीछे वह और नगर निगम के आला अधिकारी पश्चिम क्षेत्र मिलकर खेल खेल रहे हैं।

आज जब उस स्थान पर निरीक्षण करने के लिए ठेकेदार और दिल्ली नगर निगम का छोटे स्तर का अधिकारी पहुंचे तो कालोनीवासियों का गुस्सा फूट पड़ा और जोरदार विरोध प्रदर्शन किया।

आश्वासन का उल्लंघन: एमसीडी अधिकारियों ने कालोनीवासियों को कूड़ाघर हटाने का वादा किया था, लेकिन कार्रवाई नहीं हुई।

नया टेंडर और निरीक्षण: कूड़े से खाद बनाने वाली मशीन के लिए टेंडर पास, ठेकेदार व कर्मचारियों का निरीक्षण शुरू। जन विरोध का स्वरूप: सर्व धर्म मित्र मंडल के अध्यक्ष के.के. छावड़ा के नेतृत्व में भारी भीड़ ने विरोध किया; बदबू व असुविधा का हवाला देकर नया कूड़ाघर बनाने से इनकार।

प्रमुख उपस्थित: रीतू वर्मा (एडवोकेट), सचिन वर्मा, वेद वर्मा, मनोहर सिंह, रावेल सिंह, बलबीर सिंह, प्रीतपाल सिंह, कुलदीप सिंह, जसवंत बजाज।

परिणाम: विरोध के दबाव में एमसीडी कर्मचारी व ठेकेदार वापस लौट गए।

यह घटना न केवल स्थानीय स्तर पर एमसीडी की लापरवाही को उजागर करती है, बल्कि दिल्ली के अन्य इलाकों में भी फैल रही कूड़ा समस्या का प्रतीक है।

पुराने कूड़ाघर से पहले ही कालोनीवासी बदबू व स्वास्थ्य समस्याओं से जूझ रहे हैं, ऐसे में नया निर्माण असहनीय है। प्रशासन को तत्काल हस्तक्षेप कर वादा निभाना चाहिए, वरना जन आंदोलन और तेज होगा।

जनहित में दिल्ली सरकार, विधायक क्षेत्र, एमसीडी पार्षदों व अधिकारियों से मांग है कि कूड़ाघर हटाने की प्रक्रिया तेज करें और वैकल्पिक व्यवस्था सुनिश्चित करें।

स्वच्छ दिल्ली का सपना तभी साकार होगा जब नागरिकों की आवाज सुनी जाएगी।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
https://tolwa.com/about.html I
tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

पिंकी कुंडू

आज का साइबर सुरक्षा विचार: SMS से हटकर Authenticator या Passkey अपनाइए — खुद को साइबर धोखाधड़ी से पूरी तरह सुरक्षित बनाइए।

सिर्फ 02 मिनट दीजिए। जिन हज़ारों लोगों ने इस बात को समझा है, वे कभी साइबर धोखाधड़ी में फँसे ही नहीं। ये 02 मिनट आपको घंटों की परेशानी से बचाएँगे और आपकी डिजिटल ज़िंदगी को सुगम बनाएँगे।

SMS की कमजोरी पहचानें

- SMS कोड दूरसंचार नेटवर्क से होकर गुजरते हैं, जिन्हें बीच में रोका जा सकता है।
- SIM-swap धोखाधड़ी, फ़िशिंग और मैलवेयर SMS को बेहद असुरक्षित बनाते हैं।
- हैकर SMS डिलीवरी में देरी और रीडायरेक्शन का फायदा उठाते हैं।

1. Authenticator ऐप्स अपनाएँ

- भरोसेमंद ऐप्स जैसे Google Authenticator, Microsoft Authenticator, या Authy इंस्टॉल करें।
- ये आपके डिवाइस पर TOTP (Time-based One-Time Passwords) लोकली जनरेट करते हैं।
- कोड हर 30 सेकंड में बदलते हैं, ऑफलाइन भी काम करते हैं और कभी असुरक्षित नेटवर्क से होकर नहीं गुजरते।
- अपने बैंकिंग, ईमेल और सोशल मीडिया अकाउंट्स को इन ऐप्स से लिंक करें और तुरंत सुरक्षा पाएँ।

इंस्टॉल करने के छोटे कदम

- चरण 1: एंड्रॉइड पर Google Play Store या iPhone पर App Store से ऐप डाउनलोड करें।
- चरण 2: ऐप खोलें → Add Account (+) चुनें → वेबसाइट/ऐप की Security Settings → Two-Factor Authentication में जाकर QR Code स्कैन करें।
- चरण 3: ऐप द्वारा जनरेट 6-digit कोड डालकर सेटअप पूरा करें।
- चरण 4: फ़ोन को PIN, फिंगरप्रिंट या फेस लॉक से सुरक्षित रखें और ऐप अपडेट करते रहें।

2. पासकी (Passkey) अपनाएँ — पासवर्ड रहित सुरक्षा

- पासकी एक डिजिटल क्रेडेंशियल है जो आपके फ़ोन या कंप्यूटर में सुरक्षित रहता है।
- लॉगिन करते समय आपका डिवाइस प्राइवेट की से एक चैलेंज साइन करता है।
- सर्वर इसे पब्लिक की से वेरिफाई करता है — न पासवर्ड, न SMS, न इंटरसेप्शन।
- हैकर आपका यूज़रनेम जान भी लें तो वे बायोमेट्रिक या डिवाइस-लेवल सुरक्षा को पार नहीं कर सकते।

पासकी सेटअप के छोटे कदम

- चरण 1: अकाउंट की Security / Sign-in Settings खोलें।
- चरण 2: Add Passkey या Create Passkey चुनें।
- चरण 3: डिवाइस आपसे PIN, फिंगरप्रिंट या फेस ID से पुष्टि करेगा।
- चरण 4: अगली बार लॉगिन पर पासकी अपने-आप काम करेगी।

3. उपकरण सुरक्षित रखें

- फ़ोन को PIN, फिंगरप्रिंट या फेस रिकग्निशन से सुरक्षित करें।
- डिवाइस एन्क्रिप्शन सक्षम करें और सॉफ़्टवेयर अपडेट रखें।
- याद रखें: पासकी उतनी ही सुरक्षित है जितना सुरक्षित आपका डिवाइस है।

4. सांस्कृतिक बदलाव लाएँ

- महत्वपूर्ण खातों के लिए SMS पर निर्भर रहना बंद करें।
- सहकर्मियों, परिवार और नागरिकों को Authenticator ऐप्स या Passkeys अपनाने के लिए प्रेरित करें।
- संस्थानों को SOPs और जागरूकता अभियानों को इस बदलाव के अनुरूप अपडेट करना चाहिए।

मुख्य संदेश

* SMS पुराना हो चुका है। Authenticator ऐप्स और Passkeys ही भविष्य हैं।
* SMS से दूर उठाया गया हर कदम आपको साइबर धोखाधड़ी से पूरी तरह सुरक्षित बनाता है।

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

पिंकी कुंडू

झुर्रियां रोकना चाहते है वह भी बिना खर्चे के

पपीता सिर्फ फल नहीं, स्किन के लिए पूरा पैकेज है। इसमें मौजूद विटामिन ए, सी, ई त्वचा को अंदर से पोषण देते हैं!

विटामिन - सी कोलेजन बनने में मदद करता है, जिससे त्वचा की लोच बनी रहती है और झुर्रियां धीरे पड़ती हैं। पैपेन एंजाइम डेड स्किन हटाकर नई, साफ परत को बाहर लाता है! नतीजा - चेहरा ज्यादा फ्रेश, साफ और जवान सा दिखता है!

आयुर्वेदिक कारण:- आयुर्वेद में पपीता दीपन - पाचन और रक्तशोधक माना गया है! यह शरीर से विषैले तत्व निकालकर त्वचा को स्वच्छ और चमकदार बनाने में सहायक माना जाता है!

वैज्ञानिक कारण:- रिसर्च बताती है कि विटामिन - सी एक शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट है जो कोलेजन सिंथेसिस सपोर्ट करता है। विटामिन - ई, फ्री - रेडिकल डैमेज से बचाता है, और विटामिन - ए स्किन रिन्यूअल में मदद करता है!

फायदे:

* झुर्रियां धीमी पड़ती है
* डेड स्किन रिमूव
* नेचुरल ग्लो
* स्किन स्मूद और साफ

नुकसान:

* बहुत ज्यादा सेवन से संवेदनशील लोगों में दिक्कत
* कच्चा पपीता प्रेग्नेंसी में न लें
* एलर्जी हो तो पहले पैच टेस्ट

जोश और ताकत के लिए अमरूद

पिंकी कुंडू

अगर शरीर में सुस्ती, जल्दी थकान या जोश की कमी महसूस होती है, तो रोज़ 1 कटोरी ताज़ा अमरूद खाना ऊर्जा और सहनशक्ति सपोर्ट के लिए सहायक माना जाता है।

अमरूद क्यों फायदेमंद माना जाता है? अमरूद में फाइबर, विटामिन सी, फोलेट, पोटेशियम और एंटीऑक्सीडेंट पाए जाते हैं।

विटामिन सी, शरीर की कोशिकाओं की मरम्मत और इम्यून सपोर्ट में मदद करता है, जबकि

फाइबर पाचन सुधारकर पोषक तत्वों के बेहतर अवशोषण में सहायक होता है।

संभावित फायदे

* पाचन तंत्र मजबूत कर शरीर को हल्का रखना
* ऊर्जा स्तर और सहनशक्ति में सुधार
* नसों और मांसपेशियों को पोषण
* थकान और कमजोरी कम करने में मदद
* समग्र शारीरिक ताकत में सकारात्मक असर

कैसे और कब लें?

* सुबह या दोपहर 1 कटोरी कटा हुआ अमरूद लें
* चाहें तो हल्का काला नमक मिलाकर खा सकते हैं
* 3–4 हफ्ते नियमित सेवन करें

जरूरी सावधानी

*ज्यादा मात्रा में रोज सेवन न करें
* गैस या पाचन समस्या हो तो कम मात्रा से शुरुआत करें
*डायबिटीज हो तो मात्रा नियंत्रित रखें

संतुलित आहार, नियमित व्यायाम और पर्याप्त नींद ही असली जोश और ताकत की मजबूत नींव हैं।

"सभी आलू एक जैसे नहीं होते"

ज़्यादातर लोग सोचते हैं कि आलू सिर्फ़ आलू होता है।

* वही कार्ब्स,
* वही असर,
* वही दिक्कतें।

इसी सोच की वजह से कई लोगों की मेटाबोलिक हेल्थ खराब हो रही है।

मैं आपको कुछ ऐसा दिखाता हूँ जो साइंस पहले से जानता है आपके आलू का रंग उसकी ताकत के बारे में क्या कहता है

1. सफ़ेद आलू इन्हें एक सादे सफ़ेद शर्ट की तरह समझें जो काम का हो, लेकिन कुछ खास नहीं।

* इनमें बेसिक एंटीऑक्सीडेंट (ज़्यादातर विटामिन C) होते हैं।

2. पीले आलू (यूकॉन गोल्ड) अब हम अपग्रेड कर रहे हैं। इनमें सफ़ेद आलू के मुकाबले लगभग 2 गुना ज़्यादा एंटीऑक्सीडेंट पावर होती है।

*क्यों? कैरोटीनॉयड न्यूट्रिएंट्स जो आँखों को सपोर्ट करते हैं, सूजन कम करते हैं, और मेटाबोलिक बैलेंस में मदद करते हैं।

3. बैंगनी आलू यहीं से बात सीरियस हो जाती है। बैंगनी आलू में सफ़ेद आलू के मुकाबले 20 गुना तक ज़्यादा एंटीऑक्सीडेंट होते हैं।

* हाँ - बीस. गुना. ज़्यादा। इनमें एंथोसायनिन भरपूर होता है, ये वही पावरफुल कंपाउंड हैं जो बेरीज़ में पाए जाते हैं:

* सूजन से लड़ते हैं
* इंसुलिन सेंसिटिविटी को बेहतर बनाते हैं
* ब्लड प्रेशर और पेट की हेल्थ को सपोर्ट करते हैं
* इस समय, बैंगनी आलू सिर्फ़ स्टार्च नहीं, बल्कि एक फंक्शनल फ़ूड की तरह काम करते हैं।
* बहुत से लोग यह गलती करते हैं वे ब्लड शुगर की दिक्कतों, सूजन या ज़िद्दी वज़न से जूझते हुए भी आलू पूरी तरह से छोड़ देते हैं।
* असली प्रॉब्लम आलू नहीं है। प्रॉब्लम क्वालिटी, रंग और तैयारी के बारे में जानकारी न होना है।
* आलू समझदारी से कैसे खाएं
* जब हो सके तो रंगीन वैरायटी चुनें
* उबालें, स्टीम करें, या पकाकर ठंडा करें (रेसिस्टेंट स्टार्च बोनस)
* प्रोटीन, सब्ज़ियों और हेल्दी फ़ैट के साथ खाएं
* ध्यान रखें कि एंटीऑक्सीडेंट ज़्यादा कार्ब्स को खत्म न कर दें

खाना सिर्फ़ कैलोरी नहीं है, खाना जानकारी है और कभी - कभी, नुकसान और ठीक होने के बीच का फ़र्क - बस आपकी प्लेट का रंग होता है।

* अगर आप इंसुलिन रेजिस्टेंस, इन्फ्लेमेशन या वज़न कंट्रोल के लिए पर्सनलाइज़्ड, एविडेंस - बेस्ड मील प्लान चाहते हैं, स्मार्ट तरीके से खाएं। ज़्यादा ठीक हों।

कैंसर से बचाव के प्रभावी उपाय (नवीनतम वैज्ञानिक जानकारी सहित)

कैंसर एक गंभीर लेकिन काफी हद तक रोकी जा सकने वाली बीमारी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) के अनुसार लगभग 30 – 50% कैंसर मामलों को स्वस्थ जीवनशैली अपनाकर रोका जा सकता है। सही आहार, नशे से दूरी और सक्रिय जीवनशैली अपनाना सबसे प्रभावी बचाव है।

इन चीज़ों से बचें

1. ठंडे पेय और अत्यधिक मीठे पेय पदार्थ
2. पैक्ड/प्रोसेस्ड फलों के जूस
3. शराब का सेवन
4. तंबाकू, गुटखा, पान मसाला
5. अत्यधिक प्रोसेस्ड और जंक फूड

क्यों बचें?

क्योंकी इन पदार्थों में

1. अधिक चीनी,
2. रसायन,
3. कृत्रिम रंग/फ्लेवर और
4. हानिकारक तत्व होते हैं

जो शरीर में सूजन (inflammation), मोटापा और कोशिकाओं की असामान्य वृद्धि को बढ़ावा देते हैं — जो कैंसर का प्रमुख कारण बन सकते हैं।

इन स्वस्थ विकल्पों को अपनाएँ

1. पर्याप्त मात्रा में स्वच्छ और शुद्ध पानी
2. ताजे फल और बिना चीनी के प्राकृतिक जूस
3. घर का बना संतुलित और पौष्टिक भोजन
4. अधिक मात्रा में फल, सब्जियाँ, साबुत अनाज और फाइबरयुक्त आहार
5. नियमित शारीरिक गतिविधि (कम से कम 30 मिनट प्रतिदिन)

क्यों आवश्यक है? प्राकृतिक और संतुलित भोजन शरीर की प्रतिरोधक क्षमता (Immunity) बढ़ाता है, वजन नियंत्रित रखता है और कोशिकाओं को स्वस्थ बनाए रखता है।

अस्वास्थ्यकर आदतों से जुड़े प्रमुख कैंसर

1. कोलोरेक्टल कैंसर अत्यधिक प्रोसेस्ड मीट, कम फाइबर वाला आहार , कोल्ड ड्रिंक्स और मोटापा इसका जोखिम बढ़ाते हैं।

* नवीनतम शोध: उच्च फाइबर और साबुत अनाज का सेवन जोखिम कम करता है।

2. इसोफेजियल कैंसर शराब , कोल्ड ड्रिंक्स और तंबाकू इसका प्रमुख कारण हैं। गर्म पेय का अत्यधिक सेवन भी जोखिम बढ़ा सकता है।

3. पेट (गैस्ट्रिक) कैंसर अत्यधिक नमकीन, प्रोसेस्ड भोजन, कोल्ड ड्रिंक्स और धूम्रपान से जोखिम बढ़ता है। ताजे फल - सब्जियाँ सुरक्षा प्रदान करती हैं।

4. लिवर कैंसर शराब और कोल्ड ड्रिंक्स का सेवन, मोटापा और हेपेटाइटिस संक्रमण प्रमुख कारण हैं। हेपेटाइटिस-B का टीकाकरण सुरक्षा देता है।

5. अग्न्याशय (पैंक्रियाटिक) कैंसर धूम्रपान, कोल्ड ड्रिंक्स, मोटापा और मधुमेह इसके जोखिम कारक हैं।

*** नवीनतम वैज्ञानिक सुझाव (2024–2025 अपडेट)**

* शराब, धूम्रपान, तंबाकू , गुटखा, पान मसाला और कोल्ड ड्रिंक्स पूरी तरह छोड़ना कैंसर जोखिम कम करने का सबसे प्रभावी तरीका है।

*नियमित व्यायाम (150 मिनट प्रति सप्ताह) कैंसर और मोटापे दोनों को नियंत्रित करता है।

* बीएमआई संतुलित रखना आवश्यक है।

*एचपीवी और हेपटाइटिस - बी वैक्सीन कुछ कैंसर से सुरक्षा प्रदान करते हैं।

* 40 वर्ष के बाद नियमित स्वास्थ्य जांच (स्क्रीनिंग) कराना लाभकारी है।

*प्लांट-बेस्ड आहार को वैश्विक स्वास्थ्य एजेंसियाँ प्राथमिकता दे रही हैं।

निष्कर्ष हालाँकि कोई भी उपाय 100% कैंसर से सुरक्षा की गारंटी नहीं देता, लेकिनःस्वस्थ भोजन + नशामुक्त जीवन + नियमित व्यायाम + समय पर जांच = कैंसर जोखिम में महत्वपूर्ण कमी।

मल में दिखने वाले बदलाव होने वाली कई बीमारियों के संकेत, जाने

पिंकी कुंडू

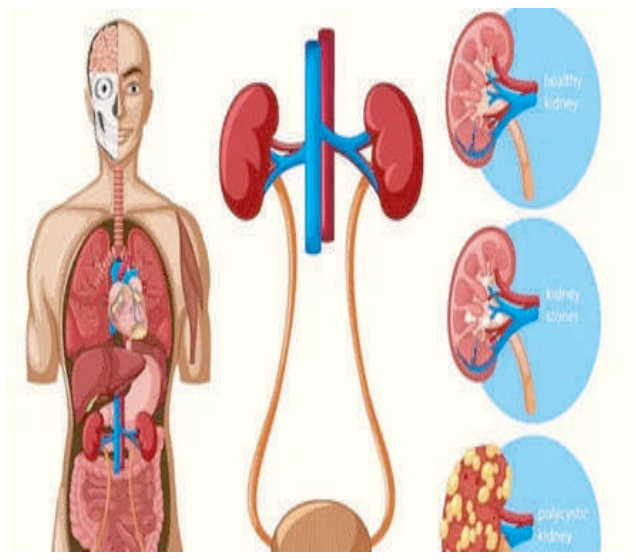

हमारे शरीर के अंदर होने वाली बीमारियों का पता अक्सर शरीर हमें पहले ही देने लगता हैं लेकिन ज्यादातर लोग इनकी पहचान करने में असमर्थ होते हैं।

बहुत कम लोगों को इनकी जानकारी है, कि हमारे शरीर के अंदर होने वाली कई बीमारियां जिनका पता हम रोज सुबह टॉयलेट में जाकर भी लगा सकते हैं।

मल में दिखने वाले बदलाव कई बीमारियों का संकेत हो सकते हैं और खासतौर पर मल में झाग बनने के लक्षण।

* मल में झाग अक्सर तब बनती है, जब मल में बलगम बनने लगा हो और मल में बलगम कई अंदरूनी बीमारियों का संकेत है।

इस पोस्ट में हम आपको मल में झाग बनने के कारण के पीछे की बीमारियों के बारे में बता रहे हैं।

1. लिवर खराब होना जब लिवर ठीक से काम करना बंद कर देता है, तो उससे जुड़े काफी लक्षण आप सुबह मल में भी देख सकते हैं। मल में बलगम के कारण झाग बने लगना लिवर से जुड़ी बीमारियों का एक संकेत हो सकता है, जिसे आपको गलती से भी इग्नोर नहीं करना चाहिए।

2. शरीर में पानी की कमीः- अगर आपके शरीर में पानी की कमी हो गई है, तो इसके कारण शरीर के कई अलग-अलग हिस्सों में लक्षण देखने को मिल सकते हैं और इनमें से एक लक्षण मल में झाग बनना भी है। अगर आपको पानी कम पीने की आदत है, तो इसके कारण मल में झाग जैसे लक्षण भी देखने को मिल सकते हैं।

3. कब्जः- आज के समय में कब्ज काफी सामान्य समस्या बन चुकी है और बड़ी संख्या में लोग इससी परेशान रहते हैं। कब्ज के कारण भी कुछ लोगों को मल में बलगम या झाग जैसे लक्षण देखने को मिल सकते हैं। कब्ज और मल में झाग बनना दोनों के पीछे का कारण पाचन क्रिया का ठीक से काम न करना भी हो सकता है।

4. बवासीरः- अगर आपके मल में झाग बनने लगी है, तो आपको इसे लंबे समय तक इग्नोर नहीं करना चाहिए। क्योंकि यह बवासीर जैसी किसी बीमारी की शुरुआत का संकेत भी हो सकता है। खासतौर पर अगर आपको मल में झाग बनने के साथ-साथ खून भी महसूस हो रहा है, तो डॉक्टर से जल्द से जल्द संपर्क कर लेना चाहिए।

5. पेट के अन्य रोगः- क्रोन डिजीज और इरिटेबल बाउल सिंड्रोम जैसी कुछ बीमारियां भी हैं, जिनके कारण इस तरह के लक्षण देखे जा सकते हैं। क्योंकि ऐसी बीमारियों में पेट, आंत व पाचन क्रिया गंभीर रूप से प्रभावित हो जाती है और पाचन ठीक से न होने के कारण मल में बलगम देखने को मिल सकता है।

ज़िंदगी का हर पड़ाव खूबसूरत और सेहतमंद आनंद उसका अहम हिस्सा

पिंकी कुंडू

यह लेख विशेष रूप से उन लोगों के लिए है जो संभोग (सेक्स) को सिर्फ शारीरिक क्रिया नहीं, बल्कि रिश्ते, सेहत और भावनात्मक जुड़ाव का हिस्सा मानते हैं, आनंद के साथ - साथ इसके वैज्ञानिक पहलुओं को जानना भी उतना ही ज़रूरी है।

संभोग के दौरान शरीर में

1. ऑक्सीटोसिन (Oxytocin) और
2. एंडॉर्फिन (Endorphins)

निकलते हैं, जो बेहतर नींद और रिलैक्स महसूस करने में मदद करते हैं।

* नियमित सेक्स से तनाव हार्मोन कॉर्टिसोल (Cortisol) का स्तर कम हो सकता है, जिससे मानसिक दबाव घटता है।

* अंतरंग संबंध से डोपामिन (Dopamine) रिलीज होता है, जो खुशी और संतुष्टि का अहसास बढ़ाता है।

* हफ्ते में 1–2 बार यौन संबंध रखने से कुछ शोधों में पाया गया है कि इम्यूनोग्लोबुलिन A (IgA) का स्तर बेहतर हो सकता है, जो इम्यून सिस्टम को मजबूत बनाने में सहायक है।

* नियमित और सुरक्षित संभोग से पार्टनर्स के बीच भावनात्मक जुड़ाव मजबूत होता है, जिससे रिश्ते में विश्वास बढ़ता है।

* सेक्स एक हल्की शारीरिक कसरत की तरह काम करता है —

* दिल की धड़कन बढ़ती है और रक्त संचार बेहतर होता है।

* औसतन 4 – 6 कैलोरी प्रति मिनट तक बर्न हो सकती हैं, जो शरीर को एक्टिव रखती हैं।

* ऑर्गेज़्म के दौरान एंडॉर्फिन रिलीज होने से कुछ लोगों में सिरदर्द या हल्के दर्द में राहत महसूस होती है।

* नियमित अंतरंगता से ब्लड प्रेशर संतुलित रखने में मदद मिल सकती है (हालाँकि यह व्यक्ति विशेष पर निर्भर करता है)।

* पुरुषों में नियमित स्खलन से प्रोस्टेट स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव की बात कुछ अध्ययनों में की गई है।

* सेक्स के दौरान बनने वाले हार्मोन त्वचा में रक्त प्रवाह बढ़ाते हैं, जिससे चेहरे पर प्राकृतिक चमक आ सकती है।

* सुबह के समय टेस्टोस्टेरोन का स्तर सामान्यतः अधिक होता है, जो पुरुषों में शुक्राणु की गुणवत्ता और ऊर्जा पर सकारात्मक असर डाल सकता है।

* संतुलित और सहमति से किया गया सेक्स आत्मविश्वास और स्टैमिना दोनों को बेहतर कर सकता है।

सबसे ज़रूरी बात — सुरक्षित सेक्स (कंडोम का उपयोग, एसटीआई की जानकारी, और सहमति) से शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य दोनों सुरक्षित रहते हैं।

अगर आप अपनी जिंदगी का आनंद नहीं ले रहे हैं, तो याद रखिए — सेक्स कोई शर्म की बात नहीं, बल्कि एक प्राकृतिक और वैज्ञानिक प्रक्रिया है। सही जानकारी, आपसी सहमति और सम्मान के साथ इसे अपनाना ही समझदारी है।

ज़िंदगी का हर पड़ाव खूबसूरत है और सेहतमंद आनंद उसका अहम हिस्सा हो सकता है, बाकी आप खुद समझदार हैं।

शिवजी के अनन्य भक्तः भृंगी और उनके तीन पैरों का रहस्य एक अद्भुत कथा!

पिंकी कुंडू

शिवगण भृंगी की कथाः- महादेव के गणों में एक हैं भृंगी। एक महान शिवभक्त के रूप में भृंगी का नाम अमर है।

कहते हैं जहाँ शिव होंगे वहाँ गणेश, नंदी, वीरभद्र के साथ भृंगी का वास स्वयं ही होगा।

क्या आप जानते है कि भृंगी के तीन पैर क्यों हैं? इसके पीछे एक बहुत ही रोचक और ज्ञानवर्धक कथा है।

भृंगी का हठः भृंगी महादेव के परम भक्त थे, लेकिन वह माता पार्वती और शिवजी में भेद करते थे। उनकी बुद्धि यह स्वीकार नहीं कर पाती थी कि शिव और शक्ति एक ही हैं।

एक बार भृंगी कैलाश पर शिवजी की परिक्रमा करने पहुँचे। शिवजी समाधि में थे और माता पार्वती उनके वाम अंग में विराजमान थीं। भृंगी ने हठ किया कि वे केवल शिवजी की परिक्रमा करेंगे, इसलिए माता पार्वती हट जाएँ। माता के समझाने पर भी जब भृंगी नहीं माने, तो उन्होंने सर्प का रूप धारण कर शिवजी और माता के बीच से निकलने का प्रयास किया।

अर्द्धनारीश्वर स्वरूप और श्रापः भक्त की यह धृष्टता देखकर, शिवजी ने तत्काल 'अर्द्धनारीश्वर' स्वरूप धारण कर लिया। अब तो भृंगी का हठ और बढ़ गया। उन्होंने चूहे का रूप धरकर प्रभु के इस स्वरूप को कुतरकर अलग करने की कोशिश की। यह देखकर माता पार्वती का धैर्य टूट गया। उन्होंने श्राप दियाः यदि तुझे मातृशक्ति का सम्मान नहीं है, तो अभी तेरे शरीर से तेरी माता का अंश (रक्त और मांस) अलग हो जाएगा।

भक्त को मिला ज्ञान और तीसरा पैरः श्राप के कारण भृंगी का शरीर केवल हड्डियों का ढांचा रह गया। असहनीय पीड़ा में उन्हें ज्ञान हुआ कि शिव और शक्ति एक ही हैं, उन्होंने माता से क्षमा माँगी। माता ने पीड़ा तो हर ली, पर भृंगी ने श्राप वापस लेने से मना कर दिया। उन्होंने कहा कि मेरा यह स्वरूप संसार के लिए एक उदाहरण रहेगा कि शिव - शक्ति में भेद नहीं करना चाहिए। प्रसन्न होकर, महादेव ने उन्हें चलने - फिरने के लिए 'तीसरा पैर' प्रदान किया और अपने गणों में प्रमुख स्थान दिया।

सीखः यह कथा हमें सिखाती है कि शिव और शक्ति, पुरुष और प्रकृति, एक दूसरे के पूरक हैं। उनमें भेद करना अज्ञानता है।

कालरात्रि, मोहरात्रि और महारात्रि

पिंकी कुंडू

कालरात्रिः- 14 इंद्रों की अवधि के बाद ब्रह्मा की जो रात्रि होती है कालरात्रि कही जाती है।

इस रात्रि के प्रलय को छुद्र प्रलय कहा जाता है। इसमें संकर्षण अर्थात्शेषनाग के मुख से प्रलयाग्नि प्रकट होती है जो सब भस्मीभूत कर डालती है।

मोहरात्रिः- ब्रह्मा का एक दिन लघु कल्प भी कहा जाता है। वह ब्रह्मा जी के 15 वर्ष बीतने पर सारे के सारे चिरंजीवी नष्ट हो जाते हैं यही उनकी आयु है इसको चिरजीवीप्रलय या दैनन्दिन प्रलय कहा जाता है। जो मोहरात्रि भी कही जाती है।

महारात्रिः- इस प्रलय के बाद ही ब्रह्मा जी सृष्टि का आरंभ पुनः करते हैं और फिर ब्रह्मा जी के 100 वर्ष बाद ब्रह्मा की आयु भी पूर्ण हो जाती है यह महाकल्प, महाप्रलय और महारात्रि कही जाती है। इस महारात्रि में मृत्यु का भी विनाश हो जाता है ब्रह्मा जी के साथ उनकी प्रिया गायत्री, धर्म, वेद भी तिरोहित हो जाते हैं

पर देवी प्रकृति और सदाशिव का विनाश नहीं होता, और संहारकारी कालाग्निरुद्र सभी रुद्रगणों के साथ

महादेव में विलीन हो जाते हैं।

जब भविष्य में इन प्रकृति की एक पलक गिरती है तब पुनः देवों की सृष्टि का आरंभ होता है।

जब इसी प्रकार प्रकृति दुर्गा की 1000बार पलकें गिरती हैं तब प्रकृति का एक दण्ड काल कहा जाता है

ऐसे ही 60दण्ड पूर्ण होना ही देवी दुर्गा का मात्र एक दिन पूरा होता है ऐसे ही 100 वर्ष बीतने पर ये प्रकृति श्री कृष्ण के वक्षःस्थल में विलीन हो जाती हैं इसी को प्रकृति का प्रलय अर्थात्प्राकृत प्रलय कहा जाता है। शिव और सदाशिव काल से भी परे है इस कारण इनकी पलकें कभी भी नहीं गिरती।

देवी बुद्धि की अधीष्ठात्री हैं अर्थात्जो भी ज्ञान है वह साक्षात्प्रकृति ही हैं इनका ही एक स्वरूप प्रेम और आनंद के रूप में लीलारत है जिसे राधा कहा जाता है।

इसी कारण हे रुद्र! जो भी पराशक्ति दुर्गा या राधा का भजन करता है उससे परम संतुष्ट होता हूँ।

श्रीगणेश के माध्यम से केतु का तीक्ष्ण बोध, अशांति नहीं - आत्मबोध और मोक्ष का मार्ग

पिंकी कुंडू

ज्योतिष शास्त्र में केतु को मोक्षकारक, रहस्यमय, अदृश्य कर्मों का दाता तथा वैराग्य का ग्रह कहा गया है।

केतु व्यक्ति को भीतर की यात्रा पर ले जाता है, माया से अलग करता है, परंतु जब यह अशुभ या पीड़ित हो जाता है तो वही वैराग्य अशांति बन जाता है, वही अंतर्दृष्टि भ्रम में बदल जाती है, और मन अस्थिर होकर दिशाहीन हो सकता है।

ऐसी स्थिति में श्रीगणेश की उपासना केतु की तीव्र, सूक्ष्म और रहस्यमयी ऊर्जा को संतुलित करती है।

भगवान गणपति, जिन्हें शास्त्रों में विघ्नविनायक, बुद्धिप्रदाता, सिद्धिदाता कहा गया है, वह केवल विघ्नों के नाशक ही नहीं, अपितु चित्त के संयोजक भी हैं।

केतु जहाँ भौतिक मोह का छेदन करता है, वहीं गणपति उस छेदन को दिशा देते हैं।

केतु का स्वभाव है —

* अचानक परिवर्तन, रहस्य, पूर्वजन्म संस्कार, तंत्र, गूढ़ ज्ञान, और आत्मचिंतन।

परंतु यदि यह असंतुलित हो,

* तो उत्पन्न करता है — चंचलता, मानसिक संशय, एकाकीपन, तथा अनिर्णय।

श्रीगणेश उस उच्छृंखल ऊर्जा को बुद्धि और विवेक का आधार देते हैं।

* उनकी उपासना से केतु का वैराग्य स्थिर साधना में परिवर्तित होता है।

* केतु की छाया, गणपति की कृपा से ज्योति बन जाती है।

संस्कृत में कहा गया है —

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥

यह मंत्र केवल कार्यसिद्धि का नहीं, अपितु चित्तशुद्धि का भी है।

केतु की शांति एवं आध्यात्मिक जागरण हेतु गणपति का यह मंत्र विशेष प्रभावी माना गया है —

ॐ केतवे नमः।
ॐ गं गणपतये नमः।

इन दोनों मंत्रों का संयुक्त जप, विशेषतः मंगलवार या चतुर्थी के दिन, साधक के भीतर के संशयों को शांत कर, अंतर्ज्ञान को स्थिर करता है।

गणपति ही वह दिव्य बुद्धि हैं जो केतु के रहस्य को समझने की सामर्थ्य देते हैं।

* वे सिखाते हैं कि वैराग्य भागना नहीं, अपितु जागना है।

* वे बताते हैं कि मोक्ष भ्रम से पलायन नहीं, बल्कि सत्य का आलोक है।

जब साधक गणपति की शरण में केतु की साधना करता है, तब छाया ही प्रकाश का द्वार बन जाती है, तब केतु भय नहीं देता, बल्कि मुक्त करता है।

* तब भ्रम नहीं, बल्कि ब्रह्म की अनुभूति होती है।

इस प्रकार श्रीगणेश के माध्यम से केतु का तीक्ष्ण बोध साधक के लिए अशांति नहीं, अपितु आत्मबोध और मोक्ष का मार्ग बन जाता है।

शिव ज्ञान के जनक हैं

पिंकी कुंडू

पार्वती ज्ञान की जननी हैं। पार्वती प्रश्न पूछती हैं। शिव प्रश्नों का उत्तर देते हैं। इससे ज्ञान रूप संतति का विस्तार होता है। शिव और पार्वती का ज्येष्ठ पुत्र है, ज्ञान। इसके बाद दूसरा पुत्र हुआ, भक्ति। यह कन्या है। ज्ञान पुरुष है, भक्ति स्त्री है। शिव जी स्वयं पुरुष हैं। शिव जी साक्षात्वैराग्य है। पार्वती स्वयमेव श्रद्धा है, श्री हैं। विष्णु का यही चतुरात्मक रूप है।

【शिव = ब्रह्म पुरुष = वैराग्य- १,
पार्वती मूल प्रकृति = = श्रद्धा-२,
(शिव + पार्वती),
पुत्र = ज्ञान ३,
पुत्री= भक्ति ४】

जहाँ वैराग्य है, श्रद्धा है, वहाँ निश्चय ही ज्ञान है, भक्ति है। इन चारों का एक स्थान में पाया जाना ही वैष्णवत्व है। विष्णु के इस चतुर्भुजात्मक रूप को मेरा प्रणाम।

जिस पुरुष में वैराग्य है, वह शिव है। जिसमें श्रद्धा है, वही पुरुष पार्वती है। वैराग्य + श्रद्धा = अर्धनारीश्वर पुरुष जिसमें ज्ञान है, वही पुत्रवान्है ज्ञानहीन = पुत्रहीन।

पुत्रहीन की गति कहाँ? ज्ञानहीन नरक का अधिकारी है भले ही वह अपने वीर्य से सैकड़ों पुत्रों को पैदा किया हो। भक्तिहीन = पुत्री विहीन।

पुत्री नहीं है तो कंन्यादान किसका किया जाय? पुत्रीविहीन पुरुष सुखी नहीं होता। भक्ति रूपी कन्या का विवाह भगवान् विष्णु से करने वाला व्यक्ति अमित सुख का भागी होता है। अविवाहित वा कन्याहीन होते हुए जो भगवान्विष्णु को भक्ति भाव से भजता है, वह पुत्रीवान्होने का सुख पाता ही है।

जिस पुरुष में वैराग्य नहीं है, वह अशिव वा अमंगल कारक है, लतखोर है। संसार उसे लात मारता है।

जिस पुरुष में श्रद्धा नहीं है, वह स्त्री विहीन / विधुर है। उसे स्वप्न में भी सुख नहीं मिलता।

जहाँ ये दोनों वैराग्य एवं श्रद्धा है, वह पुरुष अर्धनारीश्वर शिव है। उसे मेरा प्रणाम। जहाँ वैराग्य एवं श्रद्धा है, वहाँ ज्ञान एवं भक्ति होगी ही। इन चारों वैराग्य, श्रद्धा, ज्ञान, भक्ति का एक साथ होना पूर्णता है।

ऐसा पूर्ण पुरुष विष्णु है। ऐसे विष्णु को मेरा प्रणाम! जहाँ ये चारों नहीं, उस महापापी को भी मेरा प्रणाम! इन चारों से विहीन कोई नहीं होता। कुछ न कुछ मात्रा में ये चारों सब में होते हैं। इन चारों के बीजों को अंकुरित करके इन्हें अभिवृद्ध करने वाला गुरु है। ऐसे सदुरु को मैं प्रणाम करता हूँ।

गुरु कैसा है, कौन है? पृथ्वी कहती है

"अग्निसुवर्णस्य गुरुर्गवां सूर्यः परो गुरुः।
ममाप्यखिल लोकानां गुरुर्नारायणे गुरुः॥१॥
प्रजापतिपतिर्ब्रह्मा पूर्वेषामपि पूर्वजः
क ला का ष्ठ ा नि मे षा त्म ा
कालश्चाव्यक्तमूर्तिमान्॥२॥
आदित्या मरुतस्साध्या रुद्रा वस्वाश्विवह्नयः।
पितरो ये च लोकानां स्रष्टारो ऽत्रिपुरोगमाः॥३॥
ग्रहर्क्षतारकाचित्रगगनाग्निजलानिलाः।
अहं व विषयाश्चैव सर्वविष्णुमयं जगत्॥४॥
तथाप्यनेक रुपस्य तस्य रूपाण्यहर्निशम्।
बाध्यबाधकतां यान्ति कल्लोला इव सागरे॥५॥"
(श्री विष्णु पुराण ५/१)

जिस प्रकार अग्नि सुवर्ण का तथा सूर्य गो (किरण प्रकाश) समूह का परम गुरु है, उसी प्रकार सम्पूर्ण लोकों के गुरु श्री नारायण मेरे हैं। वे प्रजापतियों के पति और पूर्वजों के पूर्वज ब्रह्माजी हैं तथा ये ही कला-काष्ठा-निमेष-स्वरूप अव्यक्त मूर्तिमान काल हैं। आदित्य, मरुद्गण, साध्यगण, रुद्र, बसु, अग्नि, पितृगण और अत्रि आदि प्रजापति-ये सब अप्रमेय महात्मा विष्णु के ही रूप है। यक्ष, राक्षस, दैत्य, पिशाच, सर्प, दानव, अप्सरा, गन्धर्व आदि भी महात्मा विष्णु के रूप हैं। मह, नक्षत्र तथा तारागणों से चित्रित आकाश, अग्नि, जल, वायु में (पृथ्वी) और इन्द्रियों के सम्पूर्ण विषय-यह सारा जगत्विष्णुमय ही है। तथापि उन ५ अनेकरूपधारी विष्णु के ये रूप समुद्र की तरंगों के समान रात दिन एक दूसरे के बाध्य बाधक (विरोधी) होते रहते हैं।

पृथ्वी हमारी माता है। पृथ्वी के गुरु नारायण हैं। इसलिये हमारे भी गुरु नारायण हैं ये नारायण सब के हृदय में बैठे हैं। शरीर रूप रथ का संचालन करते हैं। अर्जुन जीव है, रथ शरीर है, जीवन कुरूक्षेत्र है। इस कुरूक्षेत्र (कर्मक्षेत्र) में जीव का प्रेरक मार्गदर्शक अन्तर्यामी कृष्ण है। जो इसके कहे अनुसार चलता है, वह महाभारत रूप भीषण जीवन संग्राम में विजयी होता है। इसके लिये प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। यह स्वतः प्रमाण है। यह कृष्ण सबके हृदय में (हृदिसंनिविष्टः- गीता) है। जो पुरुष तप करता है उसमें यह अपनी विभूतियों सहित प्रकट होता है और वह गुरु के रूप में लोक में ख्यात होता है। भगवान्के असंख्य 'गुरु' अवतार हैं। सभी गुरु नारायण के रूप अंश है। ऐसे नारायण रूप श्री महाराज जी को सब लोग प्रणाम करते हैं। जैसे अपनी आँख को जातक अपनी आँखों से नहीं देखता और यदि देखता है तो दर्पण में अपनी आँख के प्रतिबिम्ब को ही देखता है, वैसे जीव अपने भीतर के गुरु को नहीं देख पाता, दूसरे के हृदय में अवतीर्ण कृष्ण रूप गुरु को देखता है, मानता है और उसे नमन करता है। भगवान्-विष्णु को इस गुरु लीला को कौन समझ सकता है? भगवान्कहते हैं-

"ज्ञानं ज्ञेयं ज्ञानगम्य हृदि सर्वस्य विष्ठितम्।"
(गीता १३/१७)
"सर्वस्य चाहं हृदि सन्निविष्टो
मत्तः स्मृतिर्ज्ञानमपोहनं महोपनं च।"
(गीता १५/१५)
"ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।"
(गीता १८/६१)

इससे सिद्ध है, गुरुदेव सब के हृदय में छिपे बैठे हैं। अतः सभी चारचर प्राणी गुरु हुए। किन्तु सदुरू सभी नहीं हैं जो नारायण से अपने को अपृथक समझता है, वह श्रोत्रिय ब्रह्मविद् ब्राह्मण ही सद्गुरु है। अन्या ऐसे गुरु को नहीं देखता। गुरु का ज्ञान से अभिन्न सम्बन्ध है। ज्ञान दो प्रकार कहा है- शाश्वत ज्ञान, परिवर्तनशील ज्ञान। शाश्वत ज्ञान दो प्रकार का है- आत्मा का ज्ञान, परमात्मा का ज्ञान। व्यवहार का ज्ञान वा लौकिक ज्ञान परिवर्तनशील है। गुरु में सम्पूर्ण ज्ञान अध्यात्मिक, आधिदैविक एवं भौतिक तीनों होते हैं। ऐसा गुरु पूर्णगुरु है। पूर्णगुरवे नमः। पूर्ण गुरु का मिलना चरम लाभ है। सद्गुरु का मिलना अमित लाभ है। गुरु की सम्प्राप्ति = एकादश भाव की सिद्ध। एकादशेश / एकादशस्थ ग्रह / एकादश दृष्ट मह/ एकादशेशयुत् दृष्ट मह के अनुरूप जातक को वर्तमान जीवन में गुरु मिलता है।

वास्तव में व्यक्ति के रूप में भगवान्ही गुरु हैं। इसलिये मानवतनधारी गुरु को साक्षात् नारायण समझ कर उसे नमस्कार करना चाहिये। एक नारायण अनेक शरीरों में रहता हुआ अनेक है। अतः गुरु एक है, गुरु अनेक हैं। जिस गुरु के शासन में जो रहता है, वह उसका शिष्य है। शिष्याय नमः।

शिवजी आदि गुरु हैं। आदिगुरुवे नमः। पार्वती जी प्रथम शिष्य हैं। प्रथमशिष्याय नमः। शिव ने पार्वती को रामतत्व का उपदेश दिया। गोस्वामी तुलसीदास की भाषा में-

"राम ब्रह्म चिन्मय अबिनासी।
सर्वरहित सब उर पुर बासी॥
राम सो परमातमा भवनी।
तहँ भ्रम अति अविहित तव बानी॥
राम अतर्क्य बुद्धि मन बानी।
मत हमार अस सुनहि सयानी॥
राम ब्रह्म व्यापक जग जाना।
परमानन्द परेस पुराना।
सब कर परम प्रकासक जोई।
राम अनादि अवधपति सोई॥
(बालकाण्ड)

राम ब्रह्म है, चिन्मय हैं, अविनाशी है, सर्वरहित हैं, सब के हृदय में रहता है। हे भवानी। वह राम परमात्मा है। उस राम के विषय में भ्रम का होना तुम्हारे लिये अनुचित है। राम तो मन बुद्धि और वाणी से अतर्क्य है। ऐसा मेरा मत है, सुनो। राम व्यापक है, जगत्है, ब्रह्मज्ञान है, परमानन्द है, परेश है, पुराण है जो सबका परम प्रकाशक है, वही अनादि राम अवधपति है।】

राम से विमुख व्यक्ति को स्वप्न में भी सिद्धि नहीं मिलती। कहते हैं-

"राम विमुख सिधि सपनेहु नाही।"
(अयोध्याकाण्ड)

राम से विमुख रहने वाले को सम्पत्ति लाभ नहीं होता। विभीषण, रावण को फटकारता है...

"राम विमुख सठ चहासि सम्पदा?"
(लंकाकाण्ड)

हे शठ। तू राम से विमुख रहकर सम्पत्ति की इच्छा करता है? सम्पत्ति का अर्थ देवी सम्पदा से है। ज्ञान वैराग्य श्रद्धा भक्ति ये चार दैवी सम्पत्तियाँ हैं। जब जीव राम के सम्मुख होता है तो ये उसे प्राप्त होती हैं। राम स्वयं कहते हैं-

"सनमुख होई जीव मोहि जबहीं।
जन्म कोटि अघ नासहि तबहीं।"
(सुन्दरकाण्ड)

राम के सम्मुख होते ही जीव के करोड़ों जन्मों के पाप कट जाते हैं। ऐसा निष्पाप जातक सद्यः सम्पत्ति लाभ का अधिकारी होता है। तस्मै नमः।

सृष्टी की रचना और संचालन का मुख्य केंद्र 'लिंग' (शिव) और 'योनि' (माँ शक्ति)

पिंकी कुंडू

स्त्री देह केवल भोग की वस्तु नहीं, ब्रह्मांड की ऊर्जा का साक्षात्केंद्र है!तंत्र शास्त्र में 'योनि पूजा' का गूढ़ रहस्य।

अघोर और तंत्र शास्त्र में सृष्टी की रचना और संचालन का मुख्य केंद्र 'लिंग' (शिव) और 'योनि' (माँ शक्ति) को माना गया है।

आज के भौतिकवादी युग में स्त्री को केवल शरीर या भोग की वस्तु मान लिया गया है, जबकि वास्तव में वह उस 'ऊर्जा पुंज' (कुंडलिनी) की स्वामिनी है, जिसके बिना इस ब्रह्मांड का संचालन ही असंभव है, तभी तो वेदों में स्त्री को पुरुष का भाग्य कहा गया है!

क्या है योनि पीठ का रहस्य? तंत्र शास्त्र के अनुसार, हर स्त्री का शरीर अपने आप में एक 'योनि पीठ' है। यह एक ऐसा पवित्र त्रिकोण है जिसमेंः

* बाएं कोण मेंः ज्ञान शक्ति
* दाएं कोण मेंः इच्छा शक्ति
* निचले कोण मेंः क्रिया शक्ति

(कुंडलिनी का केंद्र) स्थापित होती है।

इन्हीं ब्रह्मी, वैष्णवी और रौद्री शक्तियों की पूजा योनि पीठ के रूप में की जाती है।

अघोर और तंत्र में योनि पूजा क्यों की जाती है? इस परम साधना के फल अवर्णनीय हैं। इसके कुछ मुख्य आध्यात्मिक और तांत्रिक लाभ इस प्रकार हैंः

1. अघोर की मारण, मोहन, उच्चाटन और वशीकरण जैसी क्रियाओं की सफलता और उनकी काट के लिए।
2. किसी भी प्रकार के 'कीलन' के अचूक भेदन में।
3. शरीर में सोई हुई 'कुंडलिनी शक्ति' को जागृत करने में।
4. उच्च कोटि की सिद्धियों और तांत्रिक क्रियाओं के फल प्राप्ति में।
5. सूक्ष्म शरीर के संचालन और आध्यात्मिक उन्नति हेतु।
6. सांसारिक जीवन (व्यवसाय, परिवार) में प्रसिद्धि और उच्चता प्राप्त करने के लिए।
7. शारीरिक, मानसिक और आर्थिक कष्टों के सटीक और शीघ्र निवारण हेतु।

(इसके अतिरिक्त भी कई अति - गुप्त कारण हैं जिन्हें सार्वजनिक रूप से वर्णित नहीं किया जा सकता।) जो साधक स्त्री को केवल देह ना मानकर उसे 'माँ आदिशक्ति' और 'भैरवी' के रूप में साधता है, वही माँ कामाख्या के असली आशीर्वाद का पात्र बनता है।

समाधान शिविर से आमजन की समस्याओं का हो रहा त्वरित निपटान: डीडीपीओ

परिवहन विशेष न्यूज

- जिला स्तरीय समाधान शिविर में डीडीपीओ निशा तंवर ने सुनी शिकायतें, संबंधित विभागों को दिए निर्देश

झज्जर, 19 फरवरी। जिला प्रशासन द्वारा नागरिकों की समस्याओं का त्वरित समाधान सुनिश्चित करने के उद्देश्य से उपायुक्त स्वप्निल रविन्द्र पाटिल के मार्गदर्शन में समाधान शिविरों का आयोजन लगातार किया जा रहा है। इसी क्रम में गुरुवार को लघु सचिवालय में जिला स्तरीय समाधान शिविर आयोजित किया गया, जिसमें डीडीपीओ निशा तंवर ने नागरिकों की शिकायतें सुनीं और संबंधित विभागों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

शिविर में भूमि संबंधी, पेंशन, पारिवारिक पहचान पत्र, अतिक्रमण, पानी व बिजली से जुड़ी नौ समस्याएं प्रमुख रूप से सामने आईं। डीडीपीओ ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि शिकायतों का समाधान प्राथमिकता के आधार पर करते हुए पारदर्शिता और संवेदनशीलता सुनिश्चित की जाए।

उन्होंने कहा कि समाधान शिविर आमजन और प्रशासन के बीच संवाद को मजबूत करने का प्रभावी माध्यम हैं। इन शिविरों के माध्यम से लोगों को एक ही स्थान पर विभिन्न विभागों की सेवाएं उपलब्ध होती हैं तथा समस्याओं का शीघ्र समाधान संभव हो पाता है, जिससे प्रशासन के प्रति विश्वास और अधिक सुदृढ़ होता है।

इस अवसर पर एसीपी प्रदीप नैन, बिजली विभाग के कार्यकारी अभियन्ता प्रदीप कुमार, नायब तहसीलदार, मनीष बंसल सहित संबंधित विभागों के अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

उपमंडल स्तर पर समाधान शिविर उपमंडल बहादुरगढ़ में एसडीएम अभिनव सिवाच, बेरी में एसडीएम रेणुका नांदल तथा बादली में एसडीएम डॉ रमन गुप्ता की अध्यक्षता में उपमंडल स्तरीय समाधान शिविर आयोजित किए गए, जिनमें लोगों की समस्याएं सुनते हुए आवश्यक कार्रवाई की गई।

संशोधित स्टेज कैरिज स्कीम के तहत झज्जर जिले में विभिन्न मार्गों पर परमिट हेतु आवेदन आमंत्रित

परिवहन विशेष न्यूज

-जिला परिवहन अधिकारी एवं प्रादेशिक परिवहन प्राधिकरण झज्जर के सचिव अंकित कुमार चौकसे ने दी जानकारी

बहादुरगढ़(झज्जर), 19 फरवरी। जिला परिवहन अधिकारी एवं प्रादेशिक परिवहन प्राधिकरण झज्जर के सचिव अंकित कुमार चौकसे आईएएस ने बताया कि संशोधित स्टेज कैरिज स्कीम के तहत झज्जर जिले में विभिन्न अधिसूचित मार्गों पर स्टेज कैरिज परमिट प्रदान करने के लिए आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। इच्छुक व्यक्ति 18 फरवरी से आगामी 15 दिनों के अंदर -अंदर आवेदन कर सकते हैं।

प्रादेशिक परिवहन प्राधिकरण के सचिव अंकित कुमार चौकसे आईएएस ने झज्जर जिले के अधिसूचित मार्गों की जानकारी देते हुए बताया कि टिकरी बॉर्डर से रोहतक वाया बहादुरगढ़, सांपला,झज्जर से चरखी दादरी वाया तलाव, गवालिसन, छुछकवास, इमलोटा, मोरवाला, समसपुर,झज्जर से कोसली वाया जहाजगढ़, छुछकवास, मातनहेल, लडायन, साल्हावास,झज्जर से खरखौदा वाया छारा, सांपला, हसनगढ़,बहादुरगढ़ से बहुझौलरी वाया दुल्हेड़ा, झज्जर, जहाजगढ़, छुछकवास, मातनहेल, सासरौली, झाड़ली प्लांट, झज्जर से गुरुग्राम वाया दादरी तोय, फरुखनगर, बेरी से फरुखनगर वाया झज्जर, दादरी तोय, झज्जर से कनीना वाया गवालिसन, छुछकवास, निवादा, साल्हावास, कोसली,झज्जर से ढांसा बॉर्डर वाया बादली,गांव सिवाना से ढांसा बॉर्डर वाया बेरी, झज्जर, बादली, झज्जर से रोहतक वाया बहराना, दिमाना, चुलाना, खरड़, कारोर, शिमली, झज्जर से रेवाड़ी वाया सिलानी, सिलाना, कुलाना,बेरी से बहादुरगढ़ वाया दुजाना चौक, छारा, मातन, झज्जर से बहादुरगढ़ वाया कबलाना, दुल्हेड़ा, माजरा, गांव शेरिया से बहादुरगढ़ वाया मदाना, दुजाना, छारा, मांडोठी, झज्जर से दादरी वाया मोरवाला, समसपुर,कोसली से ढांसा बॉर्डर वाया बादली, झज्जर, तलाव, रेढूवास, भूरावास, छुछकवास,झज्जर से कोसली वाया रईया, डावला, कासनी, सुबाना,फरुखनगर से झज्जर वाया याकूबपुर, किलोई, मोड, दादरी तोय, झज्जर से कोसली वाया डावला, रईया, हसनपुर, कासनी, सुबाना, जटवाड़ा, बिठला, अम्बोली, साल्हावास,बहादुरगढ़ से झज्जर वाया माजरा, ढाबड़ा, दुल्हेड़ा, कबलाना, भदानी, नेहरू कॉलेज,झज्जर से रोहतक वाया गुढ़ा, दुजाना चौक, डीघल, करोंथा, शिमली, मायना,लडरावन से झज्जर वाया कानौदा, बामरौली, बहादुरगढ़, भदानी मोड़, रासलवाला, नेहरू कॉलेज, झज्जर से दादरी वाया जहाजगढ़, छुछकवास, मातनहेल, सासरौली, बिरोहड़, सेहलंगा,गांव साल्हावास से रोहतक वाया बेरी,गांव ढाकला से गुरुग्राम वाया सुबाना, छपार, अहरी, कुलाना, लुहारी, हेली मंडी, पटौदी, बिलासपुर चौक, बहादुरगढ़ से खरखौदा वाया कानौदा, लठरावन, सैहदपुर बहुझोलरी से रोहतक वाया झाड़ली प्लांट, छुछकवास, बेरी रूट शामिल हैं।

उन्होंने बताया कि इच्छुक आवेदक परिवहन आयुक्त, हरियाणा, चण्डीगढ़ कार्यालय में नॉन-रिफंडेबल शुल्क 25 हजार रुपये सहित आवेदन जमा करवाएं। उन्होंने स्पष्ट किया कि निर्धारित अवधि के पश्चात किसी भी आवेदन पर विचार नहीं किया जाएगा। विस्तृत जानकारी के लिए बहादुरगढ़ स्थित जिला परिवहन अधिकारी एवं सचिव प्रादेशिक परिवहन प्राधिकरण कार्यालय से संपर्क किया जा सकता है।

कृषि विभाग से जुड़ी योजनाओं का लाभ उठाएं किसान : एसडीओ

-खाद्य एवं पोषण सुरक्षा -पोषक अनाज के तहत जिला स्तरीय किसान जागरूकता शिविर आयोजित

परिवहन विशेष न्यूज

-पराली प्रबंधन में उल्लेखनीय योगदान के लिए नौ किसान हुए सम्मानित

बहादुरगढ़ (झज्जर), 19 फरवरी। कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा गुरुवार को उप मण्डल अधिकारी (कृषि) कार्यालय में खाद्य एवं पोषण सुरक्षा - पोषक अनाज योजना के अंतर्गत जिला स्तरीय किसान सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता विभाग के एसडीओ डा सुनील कौशिक ने की। शिविर में उपमंडल के आधा दर्जन से ज्यादा किसानों को प्रशंसा पत्र देकर सम्मानित किया गया जिन्होंने पराली प्रबंधन में उल्लेखनीय योगदान दिया है।

इस मौके पर एसडीओ डा सुनील कौशिक ने उपमंडल के सभी किसानों से एग्री स्टैक किसान आईडी का पंजीकरण करवाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि वर्तमान युग में डिजिटल प्लेटफॉर्म से जुड़ने पर किसानों को योजनाओं का लाभ पारदर्शी एवं समयबद्ध तरीके से प्राप्त होगा। शिविर में विभिन्न विषय विशेषज्ञों ने किसानों को सरकार की योजनाओं का लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया।

कैंप में कृषि विभाग के सहायक पौधा संरक्षण अधिकारी भैया राम और तकनीकी अधिकारी डा रोहित वत्स ने कृषि विभाग की विभिन्न ऑनलाइन योजनाओं से अवगत कराया। डॉ. महावीर मलिक ने मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ाने और पौध संरक्षण तकनीकों से किसानों को विस्तार से अवगत कराया, वहीं विशेषज्ञ रमेश कुमार ने प्राकृतिक खेती अपनाने के लिए किसानों को प्रेरित किया, जबकि कुमारी कविता ने पोषक अनाजों के महत्व पर प्रकाश डाला। इसी प्रकार बीएओ राकेश राणा ने पीएम किसान सम्मान निधि योजना तथा एग्री स्टैक किसान आईडी पंजीकरण प्रक्रिया के बारे में विस्तार से जानकारी दी। पशुपालन एवं डेयरिंग विभाग के डॉ. रविन्द्र दहिया ने विभागीय योजनाओं की जानकारी सांझा की। एडीओ रोहद प्रदीप मलिक ने मृदा नमूना एवं मृदा स्वास्थ्य कार्ड के महत्व को समझाया। गांव माजरी के प्रगतिशील किसान जयपाल ने प्राकृतिक खेती तथा गांव छारा के संदीप ने बाजरा के मूल्यवर्धन के अनुभव साझा कर किसानों को प्रेरित किया।

इस अवसर पर तकनीकी सहायक सुनील कुमार, दीपक कुमार, सांख्यिकी सहायक मुंशी राम, सुधीर कुमार, जितेन्द्र, एटीएम नवीन कुमारी कृषि सुपरवाईजर जैसिका दलाल सहित विभागीय अधिकारी एवं प्रगतिशील किसान उपस्थित थे।

बेरी में उपभोक्ता कष्ट निवारण फोरम की बैठक आज

बेरी (झज्जर), 19 फरवरी। बिजली निगम डिवीजन बेरी के उपभोक्ताओं की बिजली से संबंधित शिकायतों के निवारण के लिए 20 फरवरी, शुक्रवार को बिजली अदालत और उपभोक्ता कष्ट निवारण फोरम की बैठक की आयोजित की जाएगी। एसडीओ सुनील कुमार ने बताया कि बैठक उत्तर हरियाणा बिजली वितरण निगम (यूएचबीवीएनएल) के बेरी कार्यालय में सुबह 11 बजे से दोपहर 2 बजे तक आयोजित होगी। उन्होंने बताया कि बैठक में बिजली उपभोक्ताओं की बिजली बिल, कनेक्शन, लोड संबंधित समस्याओं को सुना जाएगा और उनका मौके पर ही समाधान किया जाएगा। उन्होंने बताया कि कोई उपभोक्ता फैसले से संतुष्ट नहीं है तो वह अपनी शिकायत अध्यक्ष अभियंता झज्जर के समक्ष रख सकता है।

गांव पाटोदा में जिला स्तरीय किसान मेला आज, कृषि योजनाओं की मिलेगी एक ही मंच पर जानकारी

-एसडीएम अंकित कुमार चौकसे आईएएस होंगे मुख्य अतिथि

झज्जर, 19 फरवरी। माछरौली खंड के गांव पाटोदा में 20 फरवरी (शुक्रवार) को कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के तत्वावधान में जिला स्तरीय किसान मेले का आयोजन होगा। यह मेला सुबह 11 बजे शुरू होगा, जिसमें गांव पाटोदा, लुहारी, खेड़ी सुल्तान, कहाड़ी सहित आसपास के गांवों के किसान भाग लेंगे। यह जानकारी उप कृषि निदेशक डॉ जितेंद्र अहलावत ने दी। उप कृषि निदेशक ने बताया कि किसान मेले में मुख्य अतिथि के रूप में एसडीएम झज्जर अंकित कुमार चौकसे, आईएएस शिरकत करेंगे। मेले का उद्देश्य किसानों को केंद्र व राज्य सरकार की कृषि से जुड़ी विभिन्न योजनाओं की विस्तृत जानकारी एक ही मंच पर उपलब्ध कराना है, ताकि किसान इन योजनाओं का अधिकतम लाभ उठा सकें।

उन्होंने बताया कि मेले के दौरान किसानों को एग्रीस्टैक (फार्मर आईडी), प्राकृतिक खेती, मेरी फसल मेरा ब्यौरा, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, फसल बीमा योजना, मेरा पानी मेरी विरासत, फसल विविधीकरण, माइक्रो सिंचाई, मृदा स्वास्थ्य कार्ड तथा फसल सुरक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियां दी जाएंगी। इसके अलावा किसानों को योजनाओं से जुड़ी प्रक्रिया, पात्रता और लाभ के बारे में विशेषज्ञों द्वारा मार्गदर्शन भी दिया जाएगा।

किसान मेले में कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के साथ-साथ संबंधित अन्य विभागों द्वारा भी विभिन्न स्टॉल लगाई जाएंगी। इन स्टॉलों पर किसानों को आधुनिक कृषि तकनीकों, उन्नत बीजों, सिंचाई पद्धतियों और फसल सुरक्षा उपायों का डेमोंस्ट्रेशन करके दिखाया जाएगा, जिससे किसान व्यवहारिक रूप से इन तकनीकों को समझ सकें। डीडीए डॉ जितेंद्र अहलावत ने माछरौली खंड के किसान भाइयों से अपील की है कि वे योजनाओं में पंजीकरण और जांच के लिए अपने आवश्यक दस्तावेज साथ लेकर समय पर किसान मेले में पहुंचें। उन्होंने कहा कि इस मेले के माध्यम से किसान कृषि विभाग की योजनाओं की जानकारी लेकर अपनी खेती को अधिक लाभकारी बना सकते हैं और सरकारी सुविधाओं का पूरा फायदा उठा सकते हैं।

गांव रायपुर में रात्रि ठहराव कार्यक्रम 20 फरवरी को : सीटीएम

- कार्यक्रम में विभागीय स्टॉल व स्वास्थ्य जांच शिविर के माध्यम से मिलेगी योजनाओं की जानकारी

झज्जर, 19 फरवरी। प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी की पहल पर जिला प्रशासन द्वारा प्रत्येक माह आयोजित किए जाने वाले रात्रि ठहराव कार्यक्रम का आयोजन 20 फरवरी को खंड माछरौली के गांव रायपुर स्थित राजकीय प्राथमिक पाठशाला परिसर में किया जाएगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता एडीसी जगनिवास करेंगे।

एडीसी ग्रामीणों से सीधा संवाद कर उनकी समस्याएं सुनेंगे तथा संबंधित विभागों के अधिकारियों को मौके पर ही समाधान सुनिश्चित करने के निर्देश देंगे। कार्यक्रम का उद्देश्य प्रशासन को गांव स्तर तक पहुंचाकर आमजन की समस्याओं का त्वरित एवं प्रभावी निवारण करना है। सीटीएम नमिता कुमारी ने बताया कि कार्यक्रम के दौरान विभिन्न विभागों द्वारा जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी देने के लिए स्टॉल लगाए जाएंगे, जिससे ग्रामीणों को योजनाओं का लाभ प्राप्त करने में सुविधा होगी। साथ ही स्वास्थ्य विभाग द्वारा निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया जाएगा, जहां नागरिकों की जांच कर आवश्यक परामर्श दिया जाएगा।

उन्होंने बताया कि रात्रि ठहराव कार्यक्रम प्रशासन की महत्वपूर्ण पहल है, जिसके माध्यम से अधिकारियों को गांव की जमीनी स्थिति का प्रत्यक्ष आकलन करने और विकास कार्यों की प्रगति की समीक्षा करने का अवसर मिलता है। इससे शासन और जनता के बीच संवाद और अधिक सुदृढ़ होता है।

उन्होंने ग्रामीणों से अपील की है कि वे इस अवसर का अधिकतम लाभ उठाएं और अपनी समस्याएं, सुझाव व मांगें प्रशासन के समक्ष रखें, ताकि गांव के सर्वांगीण विकास को और गति मिल सके।

बीपीएल महिलाओं को मिलेगा चालक व आत्मरक्षा प्रशिक्षण

- हरियाणा महिला विकास निगम ने 28 फरवरी तक मांगे आवेदन

झज्जर, 19 फरवरी। हरियाणा महिला विकास निगम, पंचकुला द्वारा बीपीएल (गरीबी रेखा से नीचे) वर्ग की महिलाओं और लड़कियों को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से 21 दिवसीय चालक एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू किया जा रहा है। यह प्रशिक्षण बहादुरगढ़ (झज्जर) तथा रोहतक स्थित मारुति सुजुकी ट्रेनिंग सेंटर में आयोजित होगा।

निगम के प्रवक्ता ने जानकारी देते हुए बताया कि यह प्रशिक्षण केवल हरियाणा की स्थायी निवासी बीपीएल महिलाओं/लड़कियों के लिए है। पात्रता के अनुसार आवेदिका की आयु 18 से 45 वर्ष के बीच होनी चाहिए तथा न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता 12वीं पास निर्धारित की गई है। उच्च शैक्षणिक योग्यता रखने वाली आवेदिकाओं को वरीयता दी जाएगी।

उन्होंने बताया कि आवेदिका की दृष्टि अच्छी होनी चाहिए (रंग दृष्टिहीनता न हो) और उसके पास वैध लर्नर ड्राइविंग लाइसेंस होना अनिवार्य है। गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाली या परिवार पहचान पत्र के अनुसार जिन परिवारों की वार्षिक आय 1.80 लाख रुपये या उससे कम है, वे भी आवेदन करने के पात्र हैं। प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को 1000 रुपये का वजीफा भी प्रदान किया जाएगा। निगम ने कैथल, झज्जर, रोहतक और जींद जिलों की इच्छुक एवं पात्र महिलाओं/लड़कियों से 28 फरवरी तक ऑनलाइन अथवा ऑफलाइन आवेदन आमंत्रित किए हैं। आवेदन निर्धारित प्रपत्र में सभी कॉलम सही प्रकार से भरकर तथा आवश्यक प्रमाण पत्रों की सत्यापित प्रतियों सहित ई- मेल, पंजीकृत डाक या संबंधित जिला कार्यालय में व्यक्तिगत रूप से जमा करवाए जा सकते हैं। निर्धारित तिथि के बाद प्राप्त आवेदनों पर विचार नहीं किया जाएगा। आवेदन पत्र में दूरभाष नंबर, ई-मेल एड्रेस तथा सक्षम अधिकारी द्वारा जारी प्रमाण पत्रों की सत्यापित प्रतियां संलग्न करना अनिवार्य है। निर्धारित प्रपत्र संबंधित जिला प्रबंधक कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है। अधिक जानकारी के लिए दूरभाष नंबर 01251-299560 या ई-मेल jhajjarhwdc@gmail.com पर संपर्क किया जा सकता है।

श्री वेंकटेश्वर कॉलेज में 'नेक्सेस 2026' का भव्य शुभारंभ, सूफी सुरों, युवा ऊर्जा और रचनात्मकता से गूंज उठा कैंपस

डॉ. शंभु पंवार

नई दिल्ली, 19 फरवरी। दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रतिष्ठित महाविद्यालय श्री वेंकटेश्वर कॉलेज में तीन दिवसीय वार्षिक सांस्कृतिक महोत्सव 'नेक्सेस 2026' का शुभारंभ 18 फरवरी को अत्यंत भव्य, अनुशासित और उल्लासपूर्ण वातावरण में हुआ। ऊर्जावान प्राचार्य प्रो. वज्झला रवि के कुशल नेतृत्व में आयोजित इस उत्सव ने कॉलेज परिसर को कला, संस्कृति और युवा प्रतिभा के रंगों से सराबोर कर दिया।

उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि द हिंदू, नई दिल्ली के रेजिडेंट एडिटर वर्गीस के जॉर्ज रहे, जबकि श्री वेंकटेश्वर कॉलेज की एलुमनाई एवं प्रसिद्ध हिंदुस्तानी शास्त्रीय गायिका शिवांगिनी येशु युवराज तथा ख्यातिप्राप्त कथक नृत्यांगना प्रोमा मुखर्जी ने गेस्ट ऑफ ऑनर के रूप में कार्यक्रम की गरिमा को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया।

अपने प्रेरणादायी संबोधन में प्राचार्य प्रो. वी. रवि ने कहा कि 'नेक्सेस' महज़ एक उत्सव नहीं, बल्कि रचनात्मक सोच, सांस्कृतिक चेतना और युवा प्रतिभा का जीवंत मंच है, जो छात्रों को स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के साथ आत्म-अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करता है।

महोत्सव के पहले दिन का मुख्य आकर्षण रही सूफी नाइट, जहां अनिरुद्ध वर्मा और निजामी ब्रदर्स की भावपूर्ण प्रस्तुतियों ने समूचे परिसर को सूफियाना रंग में रंग दिया। इस अवसर पर केंद्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री के. मोहन नायडू मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान कॉलेज परिसर छात्रों की भारी भीड़ से खचाखच भरा रहा और प्रत्येक प्रतियोगिता में युवाओं का उत्साह देखते ही बनता था। आयोजन को सफल बनाने में कॉलेज स्टूडेंट्स यूनियन की भूमिका उल्लेखनीय रही।

आयोजकों के अनुसार, उत्सव के दूसरे दिन 'डीजे मदारी नाइट' जबकि समापन दिवस पर प्रसिद्ध पार्श्वगायक अंकित तिवारी की लाइव प्रस्तुति महोत्सव का शिखर आकर्षण होगी, जिसका छात्रों को बेसब्री से इंतजार है। 'नेक्सेस 2026' ने एक बार फिर यह सिद्ध कर दिया है कि श्री वेंकटेश्वर कॉलेज न केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता का केंद्र है, बल्कि सांस्कृतिक चेतना और युवा सृजनात्मकता का भी सशक्त मंच है।समारोह में उप-प्राचार्य प्रो. नंदिता नारायणासामी, कोषाध्यक्ष डॉ. कृष्ण कुमार, प्रशासनिक अधिकारी पवन कुमार पाण्डेय, फाइन आर्ट्स एसोसिएशन के संयोजक डॉ. एम. कृष्णा राव तथा स्टूडेंट्स स्टाफ एडवाइजर प्रो. ओम प्रकाश की गरिमामयी उपस्थिति रही।

'जय शिवाजी, जय भारत' के जयघोष से गूंजा सातारा, 12 हजार युवाओं ने भव्य मशाल यात्रा में लिया विकसित भारत का संकल्प

संगिनी घोष

छत्रपति शिवाजी महाराज की विरासत को समर्पित ऐतिहासिक आयोजन

महान मराठा शासक की जयंती पर हजारों युवाओं की मौजूदगी ने समारोह को असाधारण उत्साह और ऊर्जा से भर दिया। कार्यक्रम ने वीरता, सुशासन और सांस्कृतिक गौरव के प्रतीक शिवाजी महाराज की प्रेरणादायक विरासत को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया।

MY Bharat की मशाल पदयात्रा बना मुख्य आकर्षण

समारोह का सबसे प्रमुख आकर्षण प्रतीकात्मक पदयात्रा रही, जिसमें लगभग 12,000 युवाओं ने मशाल लेकर "जय शिवाजी, जय भारत" के नारे लगाए। यह यात्रा एकता, संकल्प और राष्ट्र निर्माण में युवाओं की सक्रिय भागीदारी की भावना का प्रतीक बनी।

ऐसे देखें तो, यह आयोजन केवल एक स्मरणोत्सव नहीं बल्कि विकसित और सशक्त भारत के संकल्प का सामूहिक प्रदर्शन भी था।

देशभक्ति और युवा ऊर्जा से भरा माहौल

कार्यक्रम में तिरंगे और भगवा ध्वजों की मौजूदगी, सामूहिक नारों और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने वातावरण को राष्ट्रभक्ति से सराबोर कर दिया। आयोजकों का कहना था कि ऐसे आयोजन युवाओं को इतिहास से जोड़ते हैं और उन्हें आधुनिक समय में प्रेरणा लेकर आगे बढ़ने का संदेश देते हैं।

नेतृत्व और राष्ट्रनिर्माण का संदेश

वक्ताओं ने अपने संबोधन में कहा कि शिवाजी महाराज के स्वराज, प्रशासनिक कुशलता और जनकल्याण के सिद्धांत आज भी प्रासंगिक हैं। युवाओं को नवाचार, सामाजिक सेवा और नागरिक जिम्मेदारी

जैसे क्षेत्रों में योगदान देने के लिए प्रेरित किया गया।

मुख्य बिंदु

* शिवाजी जयंती समारोह में करीब 12 हजार युवाओं की भागीदारी।
* मशाल यात्रा ने एकता और संकल्प का प्रतीक प्रस्तुत किया।
* पूरे कार्यक्रम में गूंजे देशभक्ति के नारे।
* राष्ट्रनिर्माण में युवा भागीदारी पर जोर।
* शिवाजी महाराज के नेतृत्व और सुशासन के आदर्शों को रेखांकित किया गया।
* आयोजन ने इतिहास और आधुनिक विकास दृष्टि को जोड़ा।

आगे की दिशा

Press Information Bureau से जुड़े अधिकारियों के अनुसार, इसी तरह के युवा-केंद्रित कार्यक्रम अन्य क्षेत्रों में भी आयोजित किए जा सकते हैं ताकि युवाओं में नागरिक जागरूकता और राष्ट्रीय भागीदारी को बढ़ावा मिले। विशेषज्ञ मानते हैं कि ऐसे आयोजन ऐतिहासिक प्रेरणा को वर्तमान आकांक्षाओं से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

21वें दिन स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती ने तीखा हमला किया; 11 मार्च को "लखनऊ चलो" का आह्वान किया

वाराणसी: वाराणसी के केदारघाट स्थित श्री विद्यामठ में उत्तराम्नाय ज्योतिष पीठ के जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को दिए गए 40 दिन के अल्टीमेटम के 20 दिन बाद कड़ी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने आरोप लगाया कि इस दौरान मुख्यमंत्री के "हिंदू" के तौर पर काम करने के कोई संकेत नहीं दिखे और गोरक्षा के मुद्दे पर एक रहस्यमयी चुप्पी थी।

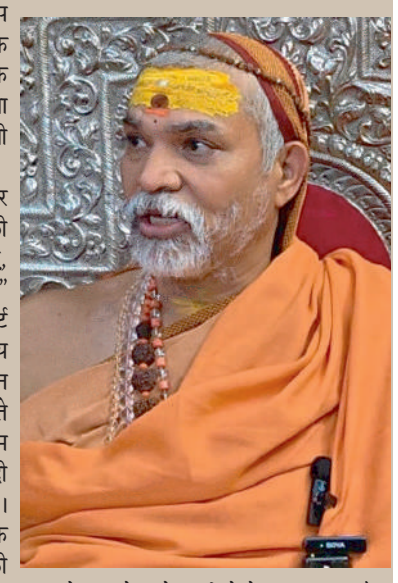

शंकराचार्य ने कहा कि सरकार ने फिल्म "गोदान" को टैक्स-फ्री करने जैसे सांकेतिक कदम उठाए, लेकिन गाय को "राज्य माता" घोषित करने और बीफ एक्सपोर्ट पर पूरी तरह बैन लगाने जैसी मुख्य मांगों पर चुप रही। 20वीं पशुधन जनगणना के डेटा का हवाला देते हुए उन्होंने दावा किया कि पश्चिम बंगाल में मवेशियों की आबादी बढ़ी, जबकि उत्तर प्रदेश में घटी। उन्होंने आगे आरोप लगाया कि "ईज़ ऑफ़ डूइंग बिज़नेस" की आड़ में, उत्तर प्रदेश देश के बड़े मीट एक्सपोर्ट करने वाले राज्यों में से एक बन गया है, जो उनके अनुसार गोरक्षा के दावों के उलट है। उन्होंने संत समुदाय और अखाड़ों से भी इस मुद्दे पर साफ़ स्टैंड लेने की अपील की।

आंदोलन को एक नई दिशा देते हुए, शंकराचार्य ने 11 मार्च, 2026 को "लखनऊ चलो" का ऐलान किया और कहा कि जब तक "गोमाता" के अधिकार सुरक्षित नहीं हो जाते, तब तक आंदोलन जारी रहेगा।

आगरा में शिवाजी जयंती पर निकली भव्य रैली, कार्यकर्ताओं ने लिया संकल्प

परिवहन विशेष न्यूज

आगरा, संजय सिंह। अंतर्राष्ट्रीय हिंदू महासंघ भारत की उत्तर प्रदेश इकाई द्वारा आज़ आगरा में छत्रपति शिवाजी महाराज की जयंती के अवसर पर भव्य वाहन रैली एवं झांकी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का नेतृत्व प्रदेश अध्यक्ष सुमित कटियार एवं प्रदेश महामंत्री गोपाल सिंह चाहर ने संयुक्त रूप से किया।

प्रातः 11 बजे गोपेश्वर की बगीची, नौबस्ता लोहा मंडी से प्रारंभ हुई यह रैली लोहा मंडी चौराहा, जयपुर हाउस, पंचकुइयां, तहसील मार्ग और कलेक्ट्रेट होते हुए छीपी टोला के रास्ते बिजलीघर चौराहा पहुंची। वहां स्थित शिवाजी चौक पर कार्यकर्ताओं ने छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

कार्यक्रम के दौरान वक्ताओं ने शिवाजी महाराज के शौर्य, राष्ट्रनिष्ठा और संगठन क्षमता को स्मरण करते हुए उनके आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया। सभा को संबोधित करते हुए सुमित कटियार और गोपाल सिंह चाहर ने कहा कि शिवाजी महाराज देश की अस्मिता और स्वाभिमान के प्रतीक हैं। शिवाजी महाराज को भारतीय इतिहास में अद्वितीय सैन्य कौशल, सुशासन और राष्ट्रभक्ति के लिए स्मरण किया जाता है। भारत के इतिहास में उनका योगदान प्रेरणास्रोत है। उन्होंने वर्तमान सामाजिक और सांस्कृतिक चुनौतियों का उल्लेख करते हुए संगठन की विचारधारा को मजबूत करने की अपील की।

वक्ताओं ने 'लव जिहाद' और धर्मांतरण जैसे मुद्दों का उल्लेख करते हुए समाज से जागरूक रहने का आह्वान किया। कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए गोपाल सिंह चाहर प्रदेश महामंत्री एवं प्रदेश अध्यक्ष सुमित कटिहार ने संयुक्त रूप से कहा है कि वीर शिवा हमारे देश का गौरव हैं। आज हम उनके जन्मदिवस के पावन अवसर पर संकल्प लेते हैं कि जिस प्रकार से देश के अंदर कट्टरपंथियों के द्वारा जिहादी तत्वों के द्वारा लव जिहाद, भूमि जिहाद, जल जिहाद, थूक जिहाद, मूत जिहाद, ब्यूटी पार्लर जिहाद, शिक्षा जेहाद और धर्मांतरण जिहाद जैसे कृत्यों को करने में लिप्त लगे हुए हैं और इससे यह देश में अस्थिरता लाना चाहते हैं और दूसरा यह एक जनसंख्या बढ़ाने के साथ क्षेत्र का भौगोलिक इतिहास बदलना चाहते हैं। आज हम सभी हिंदू वासियों से अपील करते हैं कि सभी हिंदू समाज के लोग अपने परिवार को बढ़ाये, साथ ही उन्होंने हिंदू समाज से पारिवारिक मूल्यों को सुदृढ़ करने और जनसंख्या वृद्धि के संदर्भ में अधिक संतानों के जन्म का आग्रह भी किया।

कार्यक्रम का संचालन महानगर अध्यक्ष हर्ष कटियार ने किया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से रेखा राघव, गीता जैन, विनोद गौतम, कृष्ण कुमार, रौनक दीक्षित, विकास कुमार, आयुष चाहर, शाह निरपुद खंडेलवाल, अनेक यादव, दीपक राठौड़, अनुराग शर्मा, शिवम यादव, रोहित कर्दम सहित संगठन के वरिष्ठ पदाधिकारी रवि व्यास, नितिन गोस्वामी, दीपक जैन एवं विमल प्रजापति उपस्थित रहे।

न्यू हॉलैंड ट्रैक्टर्स ने 3032 और 3230 TX स्मार्ट ट्रैक्टर का ग्रैंड लॉन्च किया

किसानों को 15 ट्रैक्टर डिलीवर किए गए | 20 ट्रैक्टर बुक किए गए।

वाराणसी: खेती के सेक्टर में मॉडर्न टेक्नोलॉजी को बढ़ावा देते हुए, न्यू हॉलैंड ट्रैक्टर्स ने आज वाराणसी के कचहरी में कमिश्नर ऑडिटोरियम में अपने 3032 और 3230 TX स्मार्ट ट्रैक्टर मॉडल को ग्रैंड लॉन्च किया। इस मौके पर कंपनी के सीनियर अधिकारी मौजूद थे।

नए मॉडल्स को स्टेट हेड नितेश सचान, स्टेट सर्विस हेड प्रदीप कुमार, कैपिटल फाइनेंस हेड अंशुमान पांडे और विवेक गंगवार, और सीनियर सेल्स मैनेजर पुनीत साहू ने मिलकर लॉन्च किया। इस इवेंट में टेरिटरी मैनेजर मनीष त्रिपाठी, विशाल उपाध्याय, ओम प्रकाश यादव, सुनील यादव, विजयपाल यादव, और दूसरे खास मेहमान भी मौजूद थे।

नए मॉडल्स को लेकर किसानों और डीलरों में काफी उत्साह था। लॉन्च के मौके पर कुल 20 ट्रैक्टरों की बुकिंग हुई, जो कंपनी पर किसानों के पक्के भरोसे को दिखाता है। डिलीवरी के बारे में, कंपनी ने बताया कि ट्रैक्टर इस तरह डिलीवर किए गए:

सोनभद्र में 4 ट्रैक्टर
मिर्ज़ापुर में 3 ट्रैक्टर
कौशांबी में 3 ट्रैक्टर
वाराणसी में 3 ट्रैक्टर
गाज़ीपुर में 2 ट्रैक्टर

कंपनी के अधिकारियों ने बताया कि 3032 और 3230 TX स्मार्ट मॉडल मॉडर्न टेक्नोलॉजी, बेहतर माइलेज और हाई परफॉर्मेंस से लैस हैं, जिससे किसानों की प्रोडक्टिविटी काफी बढ़ेगी। प्रोग्राम के आखिर में, किसानों और डीलरों ने नए मॉडल की तारीफ़ की और भविष्य में भी सहयोग जारी रखने का भरोसा जताया।

वसंत विशेष काव्यगोष्ठी "फिर से खिल उठा मन" संपन्न

परिवहन विशेष न्यूज

फरीदाबाद - काव्यगरिमा हिंदी साहित्य मंच (रजि.) के तत्वावधान में आयोजित वसंत विशेष काव्यगोष्ठी का आयोजन हाल ही में ऑनलाइन माध्यम (गूगल मीट) पर सफलतापूर्वक संपन्न हुआ।

इस काव्यगोष्ठी का विषय "फिर से खिल उठा मन" रखा गया, जिस पर कवियों ने वसंत ऋतु के उल्लास, नवजीवन, आशा और मानवीय संवेदनाओं को अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रभावशाली अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम का संचालन मंच की संस्थापिका डॉ. गरिमा भाटी (गौरी) जी द्वारा किया गया, जिन्होंने पूरे सत्र को सहजता, आत्मीयता और साहित्यिक गरिमा के साथ आगे बढ़ाया।

कार्यक्रम का शुभारंभ कवयित्री कविता कोठारी जी द्वारा प्रस्तुत सरस्वती वंदना से हुआ, जिसने वातावरण को भक्तिमय और सृजनात्मक बना दिया।

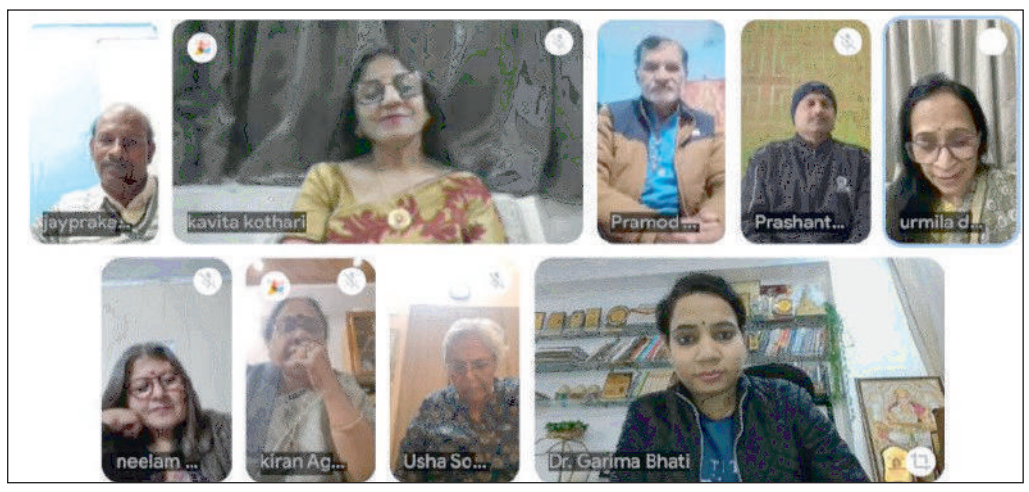

इसके पश्चात उषा सूद जी, जयप्रकाश सिंह जी, उर्मिला ध्यावाला जी, भगवान दास जी, प्रमोद झा जी, किरण अग्रवाल जी, निराला पाठक जी तथा निधि बोथरा जी ने अपनी भावपूर्ण रचनाओं का पाठ किया।

कविताओं में मन के पुनः खिलने, वसंत की कोमल अनुभूति और जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टि का सुंदर चित्रण देखने को मिला।

कार्यक्रम का आयोजन एवं समन्वय काव्यगरिमा हिंदी साहित्य मंच के सामाजिक मीडिया प्रभारी एवं आयोजक प्रेम ठक्कर (दिकुप्रेमी) द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के अंत में मंच की ओर से सभी सहभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया गया तथा भविष्य में भी ऐसे साहित्यिक आयोजनों को निरंतर आगे बढ़ाने की बात कही गई।

वाराणसी में संयुक्त पुलिस आयुक्त आलोक प्रियदर्शी का भव्य स्वागत

परिवहन विशेष न्यूज

वाराणसी: वाराणसी के नवनियुक्त संयुक्त पुलिस आयुक्त आलोक प्रियदर्शी के पदभार ग्रहण करने के अवसर पर उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार संघ के प्रदेश अध्यक्ष शिवकुमार गुप्ता के नेतृत्व में व्यापारियों ने उनका गर्मजोशी से स्वागत एवं अभिनंदन किया। व्यापारियों ने उन्हें पारंपरिक अंगवस्त्रम एवं एक पौधा भेंट कर सम्मान दिया। उन्होंने उनकी नवनियुक्ति पर हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर बोलते हुए शिवकुमार गुप्ता ने विश्वास जताया कि प्रियदर्शी के नेतृत्व में वाराणसी में कानून व्यवस्था और भी मजबूत होगी तथा व्यापारी समुदाय को अधिक सुरक्षित वातावरण प्राप्त होगा। उन्होंने प्रशासन एवं व्यापार संघ के बीच समन्वय बनाए रखने के महत्व पर भी बल दिया। स्वागत कार्यक्रम में व्यापार संघ वाराणसी ग्रामीण के जिला अध्यक्ष शुभम सिंह, मिर्जामुराद व्यापार संघ के महासचिव जितेंद्र सोनकर, रमेश कुमार, प्रदेश युवा महासचिव प्रदीप अग्रहरि, प्रदेश युवा मंत्री बृजेश केसरी, मोरेला व्यापार संघ के अध्यक्ष रामधनी यादव आदि उपस्थित रहे। कई दूसरे ट्रेडर्स के साथ।

प्रोग्राम का अंत आपसी सहयोग और जनता के हित में काम करने के सामूहिक वादे के साथ हुआ।

अंतरराष्ट्रीय करुणा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थान के अंतर्गत हुआ तीन पुस्तकों का लोकार्पण

परिवहन विशेष न्यूज

लखनऊ। विगत दिवस केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय गोमतीनगर के परिसर में खादी एवं ग्रामोद्योग महोत्सव के मंच पर अंतरराष्ट्रीय करुणा साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थान के तत्वाधान में डॉ आर्यावर्ती सरोज 'आर्या' की दो पुस्तकों काव्य संग्रह -"निश्चेतन सिलिका" और बाल कहानी संग्रह "चंद्रयान" तथा रवीन्द्र नाथ तिवारी के काव्य संग्रह- "राष्ट्र चिन्तन" का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत मां सरस्वती के पूजन, दीप प्रज्वलन, माल्यार्पण और उनकी वंदना से की गई। सरस्वती वन्दना कवयित्री निशा सिंह 'नवल' ने किया।अध्यक्ष नरेंद्र भूषण तथा विशिष्ट अतिथि महेन्द्र भीष्म ने

पुस्तक के सम्बन्ध में वक्तव्य दिया। यह कार्यक्रम वरिष्ठ साहित्यकार नरेन्द्र भूषण की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में वरिष्ठ साहित्यकार महेन्द्र भीष्म, हरिश्चंद्र निशांत रवीन्द्र नाथ तिवारी, निर्भय नारायण गुप्त, के पी त्रिपाठी पुंज, गिरधर खरे, अष्ठाना महेश प्रकाश विशिष्ट अतिथि के रुप में मंचस्थ रहे। श्रीमती शरद सिंह, शरद मिश्र सिन्धु, अरविंद रस्तोगी, रवि कांत पांडेय, अनिल कुमार जैसवार 'बेअदब लखनवी', मनमोहन बाराकोटी, शशि नारायण त्रिपाठी, आशुतोष तिवारी 'आशु', हिमांशु सक्सेना 'अर्श लखनवी' करुणा पाण्डेय, राधा बिष्ट, मनस्वी श्वेता, शीला वर्मा मीरा, अलका गुप्ता 'प्रियदर्शनी', पायल लक्ष्मी सोनी, सरला शर्मा 'आस्मां', निशा सिंह 'नवल' और रेनू द्विवेदी ने शानदार काव्यपाठ किया, जिस पर पंडाल तालियों की गड़गड़ाहट से गूंजता रहा। कार्यक्रम का बेहतरीन संचालन रेनू द्विवेदी ने किया। सभी मंचीय अतिथियों को माल्यार्पण एवं शाल्यार्पण कर व कलम देकर उन्हें सम्मानित किया गया। आमंत्रित सभी कवि- कवयित्रियों को माल्यार्पण एवं कलम भेंटकर उन्हें सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के अंत में संस्थान की संस्थापिका एवं अध्यक्ष डॉ आर्यावर्ती सरोज 'आर्या' ने सभी आगंतुकों का हार्दिक आभार व्यक्त किया।

ब्रेकिंग न्यूज | रायबरेली

रायबरेली PWD की 1600 मीटर सड़क पर बवालः ग्रामीणों का हंगामा, जेई-ठेकेदार पर भ्रष्टाचार के आरोप

सदर क्षेत्र के राही ब्लॉक अंतर्गत ग्राम सभा ताला बसाढ़ में पीडब्ल्यूडी द्वारा बनाई रही सड़क

मानकों के विपरीत निर्माण का आरोप लगाते हुए ग्रामीणों ने मौके पर जोरदार विरोध प्रदर्शन

किया और विभागीय जूनियर इंजीनियर (जेई) व ठेकेदार पर खुलेआम भ्रष्टाचार का आरोप जड़ दिया।

यह सड़क शिवेन्द्र सिंह के घर के पास से शुरू होकर नेशनल हाईवे स्थित विराट ढाबा तक बनाई जा रही है।

ग्रामीणों का कहना है कि निर्माण शुरू होते ही गुणवत्ता की पोल खुल गई।

ग्रामीणों के आरोप क्या हैं ?घटिया सामग्री का इस्तेमाल सड़क की मोटाई मानक से कमसही तरीके से कंपैक्शन नहीं

कई जगहों पर शुरुआती दरारें,निर्माण के दौरान जेई की गैर मौजूदगी,एक ग्रामीण ने आरोप लगाया,

सड़क डालते समय सामग्री का सही अनुपात नहीं रखा गया। जेई साहब साइट पर नजर नहीं आए।

ठेकेदार और अधिकारी मिलकर लाखों का खेल कर रहे हैं।सुबह 7 बजे सड़क निर्माण स्थल पर हंगामा

ग्रामीणों ने निर्माण स्थल पर इकट्ठा होकर नारेबाजी की। उनकी मांग ह

जेई और ठेकेदार को तत्काल हटाया जाएपूरे निर्माण कार्य की निष्पक्ष जांच हो मानक के अनुसार दोबारा सड़क बनाई जाए

ग्रामीणों ने चेतावनी दी है कि अगर गुणवत्ता में सुधार नहीं हुआ तो वे काम रुकवाने के साथ डीएम को ज्ञापन देंगे।

ग्रामीणों का आरोप है कि महज 1600 मीटर सड़क में भी करोड़ों रुपये का बजट दिखाया जा रहा है,

जो सीधे-सीधे भ्रष्टाचार की ओर इशारा करता है। स्थानीय स्तर पर जेई और ठेकेदार दोनों के मौके से गायब रहने की भी बात सामने आई है।

रायबरेली में PWD पर पहले भी उठ चुके हैं सवाल

बसाढ़ का यह मामला जिले में पीडब्ल्यूडी निर्माण कार्यों को लेकर उठती रही शिकायतों की एक और कड़ी बनता जा रहा है।

सत्यम मिश्रा
सोशल मीडिया विशेषज्ञ
उत्तर प्रदेश/उत्तराखंड

भारतीय ज्ञान परंपरा और विज्ञान शिक्षा : सोच-समझकर आगे बढ़ने की आवश्यकता

विजय गर्ग

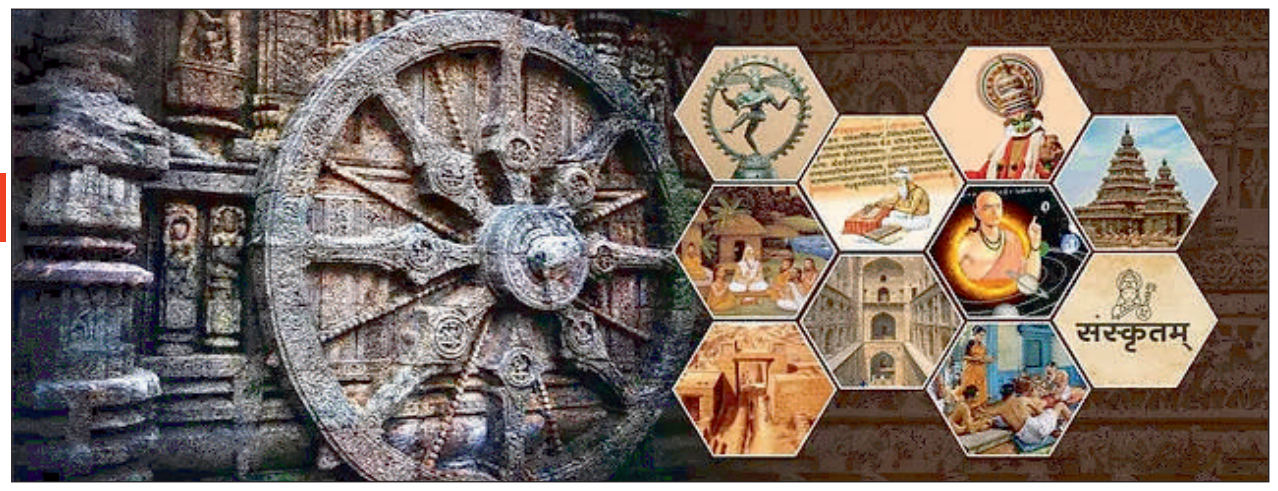

भारत की ज्ञान परंपरा हजारों वर्षों पुरानी है। यहाँ शिक्षा केवल जीविका कमाने का माध्यम नहीं थी, बल्कि जीवन को समझने, प्रकृति के साथ सामंजस्य बनाने और मानव कल्याण की दिशा में आगे बढ़ने का साधन थी। आज जब विज्ञान और तकनीक का युग है, तब यह प्रश्न महत्वपूर्ण हो जाता है कि क्या हमारी आधुनिक विज्ञान शिक्षा भारतीय ज्ञान परंपरा से जुड़कर आगे बढ़ रही है या उससे कटती जा रही है।

भारतीय ज्ञान परंपरा की वैज्ञानिक दृष्टि

भारतीय परंपरा में ज्ञान को समग्र रूप में देखा गया। वेद और उपनिषद में ब्रह्मांड, प्रकृति, चेतना और जीवन के रहस्यों पर गहन विचार मिलता है। आचार्य चरक और सुश्रुत ने आयुर्वेद और शल्य चिकित्सा में वैज्ञानिक पद्धतियों का प्रयोग किया। आर्यभट ने खगोल विज्ञान और गणित में ऐसे सिद्धांत दिए जो आधुनिक विज्ञान की नींव से मेल खाते हैं।

यह परंपरा अनुभव, अवलोकन और तर्क पर आधारित थी — जो विज्ञान की मूल आत्मा है।

आधुनिक विज्ञान शिक्षा की चुनौतियाँ

आज की शिक्षा प्रणाली में विज्ञान को अक्सर परीक्षा और अंकों तक सीमित कर दिया गया है। विद्यार्थी सूत्र याद करते हैं, प्रयोगों का उद्देश्य समझे बिना उन्हें दोहराते हैं और विज्ञान को जीवन से जोड़ने में असफल रहते हैं।

मुख्य चुनौतियाँ हैं:

रटने की प्रवृत्ति, समझ की कमी

प्रयोगात्मक शिक्षा का अभाव

प्रकृति और स्थानीय ज्ञान से दूरी

विज्ञान को नैतिकता और जीवन मूल्यों से अलग देखना

भारतीय ज्ञान परंपरा से क्या सीखें?

भारतीय ज्ञान परंपरा विज्ञान शिक्षा को अधिक जीवन्त और प्रासंगिक बना सकती है।

1. समग्र दृष्टिकोण

ज्ञान को अलग-अलग विषयों में बाँटने के बजाय जीवन से जोड़कर समझना।

2. अनुभव आधारित सीखना

प्रकृति का अवलोकन, औषधीय पौधों का अध्ययन, स्थानीय पर्यावरण की समझ।

3. विज्ञान और नैतिकता का संतुलन

विज्ञान का उद्देश्य मानव कल्याण होना चाहिए, केवल तकनीकी प्रगति नहीं।

4. प्रश्न पूछने की संस्कृति

उपनिषदों की संवाद परंपरा जिज्ञासा और चिंतन को बढ़ावा देती है।

विज्ञान शिक्षा में परंपरा का समावेश कैसे हो?

पाठ्यक्रम में भारतीय वैज्ञानिकों और परंपरागत ज्ञान को शामिल किया जाए

योग, आयुर्वेद, पर्यावरणीय ज्ञान को वैज्ञानिक दृष्टि से पढ़ाया जाए

स्थानीय ज्ञान प्रणालियों का दस्तावेजीकरण और अध्ययन

प्रयोगात्मक एवं प्रोजेक्ट आधारित शिक्षा को बढ़ावा

विज्ञान को सामाजिक समस्याओं के समाधान से जोड़ा जाए

सावधानी भी आवश्यक

परंपरा को अपनाते समय अंधविश्वास और वैज्ञानिक सोच में अंतर समझना जरूरी है। हर परंपरागत विचार वैज्ञानिक नहीं होता। इसलिए:

प्रमाण और परीक्षण आवश्यक हैं

वैज्ञानिक पद्धति का पालन अनिवार्य है

तर्क और विवेक को प्राथमिकता दी जानी चाहिए

आगे की राह

भारत यदि ज्ञान महाशक्ति बनना चाहता है, तो उसे अपनी जड़ों से जुड़े रहते हुए आधुनिक विज्ञान की दिशा में आगे बढ़ना होगा। भारतीय ज्ञान परंपरा हमें सोचने, प्रश्न करने और प्रकृति के साथ संतुलन में जीने की प्रेरणा देती है, जबकि आधुनिक विज्ञान हमें खोज, नवाचार और तकनीकी प्रगति की दिशा दिखाता है।

दोनों का समन्वय ही भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

विज्ञान तभी सार्थक है जब वह ज्ञान, संवेदनशीलता और मानवता के साथ जुड़ा हो — और यही भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल संदेश है।

डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

बांग्लादेश कैबिनेट में हिंदू मंत्रियों के होने के निहितार्थ

बीते कुछ महीनों में 11 हिंदुओं के साथ हुई निर्मम बर्बरता ने बांग्लादेश की न सिर्फ थू थू करवाई बल्कि दशको से मधुर संबंधों को भी पटरी से उतार दिया था। इसको लेकर दोनों मुल्कों में तल्खियां बनी हुई थीं। रहमान जानते हैं अगर माहौल ऐसा ही बरकरार रहा, तो रिश्तो की दूरियां घटने वाली नहीं? ऐसी अखरती दुश्वारियों पर गौर करते हुए ही रहमान ने अपनी कैबिनेट में हिंदू समुदाय से ताल्लुक रखने वाले सांसदों को अहम औहदे सौंपे ताकि रिश्तों में फिर से नरमी लाई जा सके। भारत ने भी उनके निर्णय को सराहा है।

डा रमेश ठाकुर

पड़ोसी मुल्क बांग्लादेश में तारिक रहमान के रूप में नई सरकार शपथ ले चुकी है। खास बात ये है रहमान के नेतृत्व वाली नई सरकार में दो हिंदू सांसदों को मंत्री बनाया गया है। उनके इस निर्णय को भारत के साथ प्रत्यक्ष रूप से बिगड़े संबंधों को सुधारने की पहल के रूप में समूची दुनिया देख रही है। इस कदम से चीन-पाकिस्तान चिड़े भी हैं। वो नहीं चाहते कि बांग्लादेश भारत या उनसे वास्ता रखने लोगों को तवज्जो दे लेकिन, तारिक रहमान ने उनके नापाक मंसूबों को धता बताते हुए, बड़ी सूझ बूझ से कदम आगे बढ़ाया। बीते कुछ महीनों में 11 हिंदुओं के साथ हुई निर्मम बर्बरता ने बांग्लादेश की न सिर्फ थू थू करवाई बल्कि दशको से मधुर संबंधों को भी पटरी से उतार दिया था। इसको लेकर दोनों मुल्कों में तल्खियां बनी हुई थीं। रहमान जानते हैं अगर माहौल ऐसा ही बरकरार रहा, तो रिश्तो की दूरियां घटने वाली नहीं? ऐसी अखरती दुश्वारियों पर गौर करते हुए ही रहमान ने अपनी कैबिनेट में हिंदू समुदाय से ताल्लुक रखने वाले सांसदों को अहम औहदे सौंपे ताकि रिश्तों में फिर से नरमी लाई जा सके। भारत ने भी उनके निर्णय को सराहा है।

गौरतलब है कि तारिक रहमान के आगाज से पूर्व बांग्ला-हिंदुओं पर किस तरह के अत्याचार हुए हैं और हो भी रहे हैं? ऐसी निंदनीय घटनाओं को तत्काल प्रभाव से रोकने की चुनौती तारिक रहमान के सामने अभी भी खड़ी है हालांकि, रोकने के लिए वह अपने कदम तेजी से बढ़ा रहे हैं। प्रधानमंत्री रहमान सबसे पहले पूर्व की अंतरिम सरकार के मुखिया रहे मोहम्मद यूनुस के अटपटे और संबंध बिच्छेद भरे निर्णयों की समीक्षा करेंगे। उनका झुकाव भारत को परेशान करने वाली पाकिस्तान-चीन की संयुक्त खुराफाती नीतियों की ओर ज्यादा रहा था। रहमान अच्छे से समझते हैं कि जबतक मोहम्मद यूनुस कार्यकारी प्रधानमंत्री रहे, उन्होंने भारत के साथ संबंधों को बिगाड़ने की हर संभव कोशिशें कीं। कुछ उन्होंने की और कुछ दूसरे देशों ने करवाई? दूसरे देश कौन से हैं जिनके नाम लेने की शायद जरूरत नहीं? सभी जानते हैं। प्रधानमंत्री तारिक रहमान भारतीय हुकूमत का साथ लेकर और अपनी कैबिनेट में अल्पसंख्यक हिंदू मंत्रियों की आमद के साथ बांग्लादेश में अगले पांच सालों तक समानांतर सरकार चलाना चाहते हैं। इसी को ध्यान में रखकर जब उनकी पार्टी बीएनपी चुनावों में जीती तो सबसे पहले वह अपने धुरविरोधी विपक्षी नेता और जमात-ए-इस्लामी प्रमुख शफीकुर रहमान के बिना बुलाए, ढ़लती शाम के बाद उनके आवास पहुंच गए। चुनावी गुस्सेबाजियों के इतर उनसे नई सरकार में सहयोग की गुजारिश करी। विपक्षी नेता ने भी राजनीतिक दुश्मनी छोड़कर उनका गर्मजोशी से अपने घर पर स्वागत किया। दरअसल, इस तरह की खूबसूरत परंपरा का प्रचार-प्रसार पूरे विश्व में होना चाहिए कि चुनाव बाद विपक्ष से सत्ता पक्ष को कैसे व्यवहार करना चाहिए। ये उन देशों के लिए सीख भी है जहां पक्ष-विपक्ष आपस में अनैतिक कुकर्मों की सभी सीमाएं लांघ रहे हैं। रहमान उस विपक्षी नेता के घर भी पहुंचे जिनकी पार्टी चुनावों में तीसरे स्थान पर रही। नेशनल सिटीजन पार्टी के नाहिद इस्लाम को भी गले लगाया और बांग्लादेश के विकास में उनसे भी सहयोग मांगा। राजनीति में ऐसी तस्वीरों का दिखना दुर्लभ होता है लेकिन बांग्लादेश में दिखी। रहमान की जीत पर पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का उन्हें भाई बताना और उनकी जीत की खुशी में फूल-मिठाइयां ढाका भेजना भी धूमिल संबंधों में रस भरने जैसा कहा जाएगा। साथ ही रहमान की शपथ में भारत सरकार की ओर से लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला का पहुंचना भी सुखद और नए संबंधों में नए सिरे से गढ़ने जैसा है। नए रंग में रिश्तों को रंगने की दरकार इसलिए भी महसूस होने लगी है क्योंकि बांग्लादेश के सत्यानाश के लिए जिस तरह से चीन-पाकिस्तान मिलकर घेराबंदी कर रहे हैं जिसका अंदाजा नवगठित सरकार के मुखिया को भी है। बांग्ला-हिंदू संबंध जितने बिगड़ेंगे, उतना फायदा ये दोनों मुल्क मिलकर उठाएंगे। पूर्व की कार्यकारी सरकार को इन्होंने कठपुतली की तरह इस्तेमाल किया। पाकिस्तान की शह पर बंगाली और हिंदुओं को खूब लड़ाया गया लेकिन संपन्न हुए 13वें राष्ट्रीय चुनाव में तीन हिंदू समुदाय के सांसद जीते हैं जिनमें निताई राय चौधरी को स्पीकर, चंटगांव से जीते अधिवक्ता दीपेन दीवान को पहाड़ी क्षेत्रों के संरक्षण के लिए मंत्री तो वहीं गोयेश्वर राय चौधरी को रेलमंत्री बनाया गया है।

बांग्लादेश में नवगठित हुकूमत के साथ करीब एक डेढ़-सालों से दंगों का दंश झेल रहे देश में आखिरकार नई सुबह का आगाज हो चुका है। अवाम को इस दिन का लंबे वक्त से इंतजार था। वहां काफी जद्दोजहद और राजनीतिक अस्थिरता के बीच हुए आम चुनावों में बीएनपी ने बड़े मार्जिन से विजय हासिल की है। कुल संसदीय 298 सीटों में 297 पर चुनाव हुए, उनमें से रिकॉर्ड 209 सीटें बीएनपी ने जीतीं। दूसरे नंबर पर जमात-ए-इस्लामी पार्टी रही जिसने 68 सीटें जीतीं। तारिक रहमान की नई कैबिनेट में डॉ. खलीलुर रहमान को विदेश मंत्री, सलाहुद्दीन अहमद को गृह मंत्री, डा. अमीर खसरू महमूद को वित्त एवं प्लानिंग की जिम्मेदारी सौंपी गई है। कुल मिलाकर तारिक रहमान ने शिक्षित और बुद्धिजीवी लोगों से अपनी कैबिनेट को सजाया है। कैबिनेट में कुल 50 मंत्री हैं जिनमें 25 कैबिनेट और 24 राज्य मंत्री शामिल हैं।

विश्व सामाजिक न्याय दिवस : समानता, अधिकार और अवसरों की दिशा में वैश्विक संकल्प

-सुनील कुमार महला

वैसे तो 20 फरवरी को कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण दिवस(अरुणाचल प्रदेश स्थापना दिवस तथा मिज़ोरम स्थापना दिवस) मनाए जाते हैं, लेकिन इसी दिन विश्व सामाजिक न्याय दिवस(वर्ल्ड डे आफ सोशल जस्टिस) भी मनाया जाता है। दरअसल,यह दिवस सामाजिक समानता, मानवाधिकार, रोजगार के अवसर और न्यायपूर्ण समाज को बढ़ावा देने के उद्देश्य से मनाया जाता है,जिसे संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित किया गया था।इस दिवस की शुरुआत वर्ष 2007 में की गई थी। यहां पाठकों को बताता चलूं कि सामाजिक न्याय (सोशल जस्टिस) से तात्पर्य (संयुक्त राष्ट्र के अनुसार) एक ऐसी स्थिति से है,जिसमें समाज के सभी लोगों को समान अधिकार, अवसर और संसाधनों तक न्यायपूर्ण पहुँच प्राप्त हो, तथा किसी भी व्यक्ति के साथ जाति, लिंग, धर्म, भाषा, वर्ग या अन्य किसी आधार पर भेदभाव न किया जाए। वास्तव में, संयुक्त राष्ट्र यह मानता है कि सामाजिक न्याय का अर्थ केवल कानूनी समानता नहीं, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, गरिमापूर्ण जीवन, मानवाधिकारों की रक्षा और सामाजिक सुरक्षा जैसी बुनियादी सुविधाओं तक समान अवसर सुनिश्चित करना भी है। इसका उद्देश्य असमानताओं को कम करना और एक समावेशी तथा न्यायपूर्ण समाज का निर्माण करना है। बहरहाल,यहां यह गौरतलब है कि भले ही यूएन जनरल असेंबली ने 2007 में इसे घोषित किया, लेकिन इसकी असली नींव 1995 के कोपेनहेगन (डेनमार्क) सम्मेलन में पड़ी थी। वहाँ दुनिया के नेताओं ने पहली बार माना था कि गरीबी मिटाना सिर्फ दान का काम नहीं, बल्कि मानवाधिकारों की रक्षा का काम है। किसी समाज में कानून का पालन होगा तथा वहां विभिन्न संसाधनों जैसे कि पैसा, स्वास्थ्य, शिक्षा का समान वितरण होगा,तभी उस समाज में सामाजिक न्याय की अवधारणा संभव हो सकती है। आज दुनिया के 60% से ज्यादा मजदूर बिना किसी कॉन्ट्रैक्ट या सामाजिक सुरक्षा के काम करते हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि उनके लिए हक मांगना(सामाजिक न्याय)ही इस दिन का असली उद्देश्य बन गया है। आज दुनिया भर में गरीबी, बेरोज़गारी, लैंगिक असमानता, मानवाधिकार हनन और सामाजिक भेदभाव जैसे मुद्दे मौजूद हैं और इस दिवस को मनाने के पीछे मुख्य कारण इन सब के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। उल्लेखनीय है कि इस दिन को बढ़ावा देने में अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (आइएलओ) की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है, जो 'सभी के लिए सम्मानजनक काम और सामाजिक सुरक्षा' की अवधारणा को मजबूत करता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज पूरी दुनिया में आर्थिक असमानता बढ़ती चली जा रही है और सामाजिक विभाजन देखने को मिल रहा है, ऐसे में यह दिवस आर्थिक समानता के साथ ही साथ सामाजिक विभाजन को कम करने पर जोर देता है। दूसरे शब्दों में कहें तो आज अमीर और गरीब के बीच की खाई खतरनाक स्तर तक बढ़ रही है, ऐसे में विश्व में शांति स्थापित करना एक टेढ़ी खीर नज़र आता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि अगर किसी समाज में बेरोजगारी, गरीबी और भेदभाव है, तो वहाँ गृहयुद्ध या अपराध की संभावना सबसे ज्यादा होती है।अब 'डिजिटल डिवाइड' पर नया फोकस हो रहा है और पिछले कुछ सालों से, यह दिन सिर्फ रोटी-कपड़ा-मकान तक सीमित नहीं रहा है। अब इस दिवस का एक बड़ा हिस्सा 'डिजिटल सोशल जस्टिस' है। दरअसल,यह एक कटु सत्य होने के साथ ही साथ एक तथ्य है कि आज भी, संचार क्रांति, एआइ के इस दौर में दुनिया की एक तिहाई आबादी के पास इंटरनेट सुविधाएं उपलब्ध नहीं है। तकनीक के इस दौर में इंटरनेट तक पहुंच न होना भी अब एक बड़ा 'सामाजिक अन्याय' माना जाता है, क्योंकि इसके बिना शिक्षा और रोजगार के अवसर छिन जाते हैं।वास्तव में सामाजिक न्याय तभी संभव हो सकता है जब समाज में शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा की नींव मजबूत हो। किसी भी समाज में समावेशी विकास शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य तथा सामाजिक सुरक्षा की नींव मजबूत करके ही संभव हो सकता है। लैंगिक समानता, सामाजिक समावेशन,गरीबी और बेरोज़गारी को समाप्त करना,मानवाधिकार और समान अवसर को बढ़ावा देना, आज पूरे विश्व समाज की अहम्-आवश्यकता है। बहरहाल, यदि हम यहां पर सरल शब्दों में कहें तो इस दिवस का मूल संदेश है-'ऐसा समाज बनाना जहां हर व्यक्ति को बराबरी, सम्मान और अवसर मिले।' बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि पिछले साल यानी कि वर्ष 2025 में इस दिवस की थीम 'सामाजिक न्याय के लिए बाधाओं को दूर करना और अवसरों को उजागर करना' रखी गई थी तथा इस वर्ष यानी कि वर्ष 2026 में यह-'साझा भविष्य के लिए असमानताओं को पाटना' रखी गई है। कहना ग़लत नहीं होगा कि यह थीम यह स्पष्ट करती है कि आधुनिक दौर में केवल पुराने मुद्दों को सुलझाना काफी नहीं है, बल्कि डिजिटल और तकनीकी युग में पैदा हो रही नई असमानताओं को भी खत्म करना जरूरी है। निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि विश्व सामाजिक न्याय दिवस केवल एक वार्षिक आयोजन नहीं है, बल्कि यह एक वैश्विक संकल्प है।यह दिवस हमें यह याद दिलाता है कि शांति और सुरक्षा तभी संभव है जब हर व्यक्ति को उसकी जाति, लिंग, धर्म या आर्थिक स्थिति के भेदभाव के बिना न्याय मिले। मतलब यह है कि समानता का अधिकार आज की आवश्यकता है।सामाजिक न्याय केवल सरकारों का काम नहीं है, बल्कि यह समाजों, अंतरराष्ट्रीय संगठनों और हम नागरिकों की भी सामूहिक जिम्मेदारी है कि हम एक समावेशी दुनिया बनाने में अपना योगदान दें। अंत में यदि हम सरल शब्दों में कहें तो जब तक समाज के सबसे कमजोर वर्ग को मुख्यधारा में शामिल नहीं किया जाता, तब तक वैश्विक विकास अधूरा है।

शक की बीमारी : प्रेम से हत्या तक का खौफनाक सफ़र

शम्भू शरण सत्यार्थी

एक अख़बार की सुर्ख़ी है—

"हफ्ते भर तक काट-काटकर जलाता रहा पत्नी का शव".

यह पंक्ति पढ़ते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं. सोच पाना भी कठिन है कि कोई इंसान, जो कभी किसी औरत को अपनी कहकर दुनिया से लड़ने का दावा करता था, वही इंसान शक की आग में इतना अंधा हो जाए कि उसे मारने के बाद भी उसके शव को टुकड़ों में काटकर जलाता रहे. यह घटना केवल एक अपराध नहीं है, यह उस मानसिक बीमारी की भयावह परिणति है जिसे हम सामान्य भाषा में शक कहते हैं.

झाँसी की यह घटना हमें भीतर तक झकझोरती है. एक रिटायर्ड रेलकर्मी, अपनी पत्नी पर यह शक करने लगता है कि उसके संबंध किसी और से हैं. यह शक धीरे-धीरे उसके दिमाग में घर करता गया, बढ़ता गया, और अंततः उसने उसी स्त्री की हत्या कर दी, जो उससे उम्र में 32 साल छोटी थी, जो उसके घर की रसोई से लेकर उसके बिस्तर तक का हिस्सा थी. हत्या के बाद भी उसका पागलपन शांत नहीं हुआ—वह शव को काटता रहा, जलाता रहा, ताकि "सबूत" मिट जाए.

यह घटना कोई अपवाद नहीं है. यह हमारे समाज में फैलती उस मानसिक हिंसा का चरम उदाहरण है, जहाँ शक प्यार को निगल जाता है और रिश्ता कब कब्र में बदल जाता है, पता ही नहीं चलता.

शक : एक धीमा ज़हर

शक कोई एक दिन में पैदा नहीं होता. यह धीरे-धीरे पनपता है—जैसे दीमक. शुरू में यह छोटे सवालों के रूप में आता है—

फोन देर से क्यों उठाया?

इतनी देर किससे बात कर रही थी?

तुम आज बदली-बदली क्यों लग रही हो?

शुरुआत में ये सवाल सामान्य लगते हैं. समाज इन्हें प्यार की चिंता कहकर जायज़ ठहरा देता है लेकिन यहीं से समस्या जन्म लेती है. जब सवाल भरोसे से नहीं, नियंत्रण की भावना से पूछे जाने लगें, तब रिश्ता बीमार होने लगता है.शक का सबसे खतरनाक पहलू यह है कि यह तर्क नहीं सुनता.जितना समझाओ, उतना ही शक बढ़ता है.सफ़ाई को भी अपराध मान लिया जाता है.धीरे-धीरे शक करने वाला खुद को जज, वकील और जल्लाद—तीनों मानने लगता है.

पति-पत्नी का रिश्ता और पुरुष अहंकार

भारतीय समाज में पति-पत्नी का रिश्ता आज भी समानता से ज़्यादा स्वामित्व की भावना से देखा जाता है, खासकर पुरुषों के मामले में. पत्नी को अक्सर इज़्ज़त, मर्यादा और घर की आन से जोड़ दिया जाता है. ऐसे में यदि पुरुष के मन में ज़रा-सा भी शक पैदा हो जाए, तो वह इसे सिर्फ निजी भावना नहीं मानता, बल्कि अपनी मर्दानगी और सम्मान पर हमला समझने लगता है.

झाँसी की घटना में भी यही दिखता है. आरोपी को शक था कि पत्नी किसी और से बात करती है. सवाल यह नहीं कि शक सही था या ग़लत—सवाल यह है कि क्या किसी इंसान को शक के आधार पर दूसरे की जान लेने का हक़ मिल जाता है?

लेकिन शक की बीमारी में इंसान यही मान लेता है कि वह जो कर रहा है, वह न्याय है.

शक और मानसिक हिंसा

हत्या अंतिम चरण है. उससे पहले लंबा दौर चलता है मानसिक हिंसा का.बार-बार शक करना.फोन चेक करना.आवाज़ ऊँची करना.चरित्र पर सवाल उठाना.अलग-थलग करना.डर के माहौल में जीने को मजबूर करना.बहुत-सी औरतें इसी दौर में घुट-घुट कर मरने लगती हैं.उनका शरीर जीवित होता है, लेकिन आत्मसम्मान, आत्मविश्वास और खुशी धीरे-धीरे खत्म हो जाती है. कई बार यही मानसिक हिंसा औरतों को आत्महत्या तक धकेल देती है. और कई बार यही हिंसा पुरुष को हत्या तक ले जाती है.

क्या शक सिर्फ पुरुष करते हैं?

नहीं.शक एक मानसिक बीमारी है, जिसका लिंग नहीं होता. कई मामलों में पत्नियाँ भी पति पर शक करती हैं—अफेयर का शक, कमाई छुपाने का शक, दूसरी औरतों से संबंध का शक. कुछ मामलों में यह शक इतना उग्र हो जाता है कि पत्नी पति की हत्या कर देती है या किसी और से करवा देती है लेकिन आँकड़े बताते हैं कि शक के नाम पर होने वाली घरेलू हत्याओं में पीड़ितों की संख्या ज़्यादातर औरतों की है. कारण साफ़ है—सत्ता का असंतुलन. पुरुष के पास शारीरिक ताकत, सामाजिक समर्थन और नियंत्रण अधिक होता है.

शक क्यों बढ़ता है?

शक की जड़ें कई स्तरों पर होती हैं.असुरक्षा खुद को कमतर महसूस करना.स्वामित्व की भावना पत्नी को अपनी चीज़ समझना.समाज की पितृसत्तात्मक सोच.औरत को शक के कटघरे में खड़ा करना.संवाद की कमी – बात करने की बजाय निगरानी करना.

सोशल मीडिया और फोन . हर मैसेज को शक की नजर से देखना.विडंबना यह है कि आज के समय में तकनीक ने शक को और आसान बना दिया है.ऑनलाइन स्टेटस, व्हाट्सऐप, कॉल हिस्ट्री—सब शक को खाद देने लगे हैं.

शक का अंत : या तो मौत, या टूटन

शक का रिश्ता कभी स्वस्थ अंत तक नहीं पहुँचता.इसका अंत दो ही तरह से होता है या तो रिश्ता टूट जाता है या कोई एक टूट जाता है.झाँसी की घटना में अंत हत्या के रूप में हुआ. लेकिन देश में हर दिन सैकड़ों रिश्ते ऐसे हैं, जो शक की आग में जल रहे हैं—बिना ख़बर बने, बिना सुर्ख़ी बने.

समाधान कहाँ है ?

शक को अपराध बनने से पहले रोका जा सकता है, रिश्तों में संवाद को प्राथमिकता देकर, प्यार को नियंत्रण से अलग समझ कर, मानसिक स्वास्थ्य को गंभीरता से लेकर, पुरुषों को यह सिखाकर कि शक मर्दानगी नहीं, कमजोरी है, औरतों को यह भरोसा देकर कि वे अकेली नहीं हैं.

सबसे ज़रूरी बात

शक को सामान्य मत बनाइए. जिस दिन समाज शक को प्यार का नाम देना बंद करेगा, उसी दिन ऐसी हत्याओं की जड़ कटनी शुरू होगी. झाँसी की वह औरत अब इस दुनिया में नहीं है लेकिन उसका सवाल हमारे सामने है— क्या प्यार शक के साथ ज़िंदा रह सकता है? जवाब साफ़ है—नहीं, जहाँ भरोसा नहीं, वहाँ प्यार नहीं और जहाँ शक है, वहाँ देर-सबेर हिंसा है.

यह घटना नहीं बल्कि उस बीमारी पर है, जो चुपचाप हमारे घरों में पल रही है. अगर आज भी हमने इसे गंभीरता से नहीं लिया तो अगली सुर्ख़ी किसी और घर की होगी—किसी और औरत की, किसी और रिश्ते की.

रेवड़ी संस्कृति बनाम कल्याणकारी राज्य - सुप्रीम कोर्ट की फिर सख़्त टिप्पणी- मुफ़्तखोरी, खैरात की संस्कृति: -लोकतंत्र,अर्थव्यवस्था और संवैधानिक दायित्व के बीच संतुलन की अनिवार्यता

रेवड़ी संस्कृति पर नियंत्रण केवल कानून का विषय नहीं, बल्कि राजनीतिक इच्छाशक्ति, नागरिक जागरूकता और आर्थिक विवेक का सम्मिलित परिणाम होगा
क्या संसाधनों का उपयोग उत्पादक परिसंपत्तियों में हो रहा है या उपभोग में?क्या करदाताओं के धन का उपयोग पारदर्शी और न्यायसंगत है? क्या भविष्य की पीढ़ियों पर ऋण का बोझ अनावश्यक रूप से डाला जा रहा है? – एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

गोंदिया – वैश्विक स्तरपर भारत विश्व का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, जहाँ 142.6 करोड़ से अधिक नागरिकों की आकांक्षाएँ, आवश्यकताएँ और अधिकार एक जटिल राजनीतिक-आर्थिक ढांचे के माध्यम से संचालित होते हैं। लोकतांत्रिक प्रतिस्पर्धा स्वाभाविक है,परंतु जब यह प्रतिस्पर्धा विकासात्मक दृष्टि के स्थान पर अल्पकालिक लोक लुभावन वादों में बदल जाती है,तब उसके दूरगामी परिणाम राष्ट्र के आर्थिक स्वास्थ्य और सामाजिक संरचना दोनों पर पड़ते हैं। हाल के वर्षों में चुनावी मौसम में मुफ्त सुविधाओं, बिजली,पानी,नकद हस्तांतरण, लैपटॉप साइकिल इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएं,उपभोक्ता वस्तुएँ, परिवहन,उपकरण विद्यार्थी अनेक मुफ्त बांटने कीघोषणाओं ने रेवड़ी संस्कृति को एक प्रमुख राष्ट्रीय बहस का विषय बना दिया है। यह बहस केवल राजनीतिक विमर्श नहीं है,बल्कि संविधान,वित्तीय अनुशासन, करदाताओं के अधिकार और भावी पीढ़ियों की आर्थिकसुरक्षा से जुड़ा प्रश्न बन चुकी है।अभी फिर से एक बार गुरुवार दिनांक 19 फरवरी 2026 को भारत क़ी सुप्रीम कोर्ट की तीन सदस्यीय पीठ,सीजेआई सूर्यकांत,जस्टिस जॉयमाल्य बागची और जस्टिस विपुल एम. पंचोली ने तमिलनाडु विद्युत वितरण निगम के मामले की सुनवाई के दौरान मुफ्त बिजली की संस्कृति पर कठोर टिप्पणी की।अदालत ने स्पष्ट कहा कि उपभोक्ता क़ी वित्तीय स्थिति का परीक्षण किए बिना सार्वभौमिक रूप से मुफ्त बिजली देना राज्य के आर्थिक विकास को बाधित कर सकता है।मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं क़ि न्यायालय की यह टिप्पणी केवल एक राज्य तक सीमित नहीं थी;यह समग्र नीति-दृष्टि पर प्रश्नचिह्न था।अदालत ने इंगित किया कि जब राज्य पहले से ऋणग्रस्त हों और विकास परियोजनाओं के लिए संसाधन सीमित हों,तब खैरात आधारित राजनीति वित्तीय अनुशासन को कमजोर करती है और दीर्घकालीन बुनियादी निवेशों, जैसे आधारभूत संरचना,स्वास्थ्य शिक्षा को प्रभावित करती है। 21 जनवरी 2026 को भी शीर्ष न्यायालय ने इस विषय को अत्यंत महत्वपूर्ण करार देते हुए लंबित याचिकाओं की शीघ्र सुनवाई की आवश्यकता पर बल दिया था। याचिकाकर्ता ने देश पर बढ़ते सार्वजनिक ऋण लगभग 250 लाख करोड़ रूपए की ओर ध्यान आकृष्ट किया। न्यायालय ने स्वीकार किया कि नीति-निर्णय का क्षेत्र कार्यपालिका का है,परंतु यह भी पूछा कि क्या राज्य के राजस्व का एक सुनिश्चित हिस्सा केवल विकास कार्यों के लिए सुरक्षित नहीं होना चाहिए? यह प्रश्न संघीय ढांचे के भीतर वित्तीय उत्तरदायित्व और जनहित के संतुलन का मूल प्रश्न है।

साथियों बात अगर हम न्यायालय की टिप्पणियों को गहराई से समझने की करें तो उसका एक केंद्रीय बिंदु था कल्याणकारी योजनाओं और चुनावी फ्रीबीज के बीच अंतर। संविधान के नीति निदेशक तत्व राज्य को शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण और सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने का दायित्व सौंपते हैं। यदि राज्य निर्धन या वंचित वर्गों को मुफ्त शिक्षा या स्वास्थ्य सुविधा देता है,तो वह संवैधानिक दायित्व का निर्वहन है। किंतु जब बिना लक्षित पहचान के, बिना वित्तीय क्षमता के आकलन के, व्यापक स्तरपर मुफ्त वस्तुओं का वितरण केवल चुनावी लाभ हेतु किया जाए,तब वह नीति-आधारित कल्याण नहीं बल्कि अल्पकालिक राजनीतिक निवेश प्रतीत होता है।अदालत ने रोजगार सृजन को प्राथमिकता देने कीआवश्यकता रेखांकित करते हुए कहा कि उत्पादक क्षमता को बढ़ाने वाली नीतियाँ ही दीर्घकालीन समाधान हैं।

साथियों बात अगर हम आर्थिक दृष्टि इस मुद्दे को समझने की करें तो रेवड़ी संस्कृति का सबसे बड़ा प्रभाव राजकोषीय घाटे और सार्वजनिक ऋण पर पड़ता है। राज्यों का बड़ा हिस्सा पहले ही वेतन,पेंशन और ब्याज भुगतान में खर्च हो जाता है।यदि अतिरिक्त संसाधन मुफ्त योजनाओं में लगाए जाते हैं, तो पूंजीगत व्यय सड़क,जल प्रबंधन,ऊर्जा ढांचा,औद्योगिक क्लस्टर के लिए संसाधन घटते हैं। इससे रोजगार सृजन की गति धीमी होती है और कराधान का आधार भी सीमित रहता है। एक दुष्चक्र बनता है: कम निवेश कम उत्पादन, कम राजस्व,अधिक उधारी और अधिक लोकलुभावन घोषणाएँ। न्यायालय द्वारा परजीवी मानसिकता की आशंका इसी आर्थिक तर्क से जुड़ी है,यदि नागरिकों को उत्पादक अवसरों के स्थान पर अनुदान आधारित निर्भरता की ओर प्रेरित किया जाए, तो श्रम भागीदारी और नवाचार दोनों प्रभावित हो सकते हैं।

साथियों बात अगर हम लोकतांत्रिक विमर्श का एक अन्य पहलू चुनावी समानता और निष्पक्षता है इसकोसमझने की करें तो,यदि राजनीतिक दल करदाताओं के धन से भविष्य में दी जाने वाली मुफ्त सुविधाओं का वादा कर मतदाताओं को प्रभावित करते हैं,तो क्या यह चुनावी प्रतिस्पर्धा की नैतिक सीमा का उल्लंघन है? चुनाव आयोग के दिशा-निर्देशों में घोषणापत्रों की पारदर्शिता की बात कही गई है, परंतु उनके वित्तीय स्रोत और व्यावहारिकता का स्वतंत्र मूल्यांकन अनिवार्य नहीं है। इस संदर्भ में न्यायालय का यह संकेत महत्वपूर्ण है कि गंभीर मामलों को तीन न्यायाधीशों की पीठ के समक्ष सूचीबद्ध किया जाएगा, ताकि व्यापक संवैधानिक प्रश्नों पर स्पष्टता आए।रेवड़ी संस्कृति का सामाजिक आयाम भी उतना ही महत्वपूर्ण है।भारत में ऐतिहासिक रूप से सामाजिक- आर्थिक असमानताएँ रही हैं। कल्याणकारी योजनाएँ सामाजिक न्याय का उपकरण रही हैं,मिड-डे मील,सार्वजनिक वितरण प्रणाली, छात्रवृत्ति, मनरेगा जैसे कार्यक्रमों ने गरीबी उन्मूलन में योगदान दिया है। इसलिए किसी भी बहस में यह सावधानी आवश्यक है कि वास्तविक कल्याणकारी योजनाओं को फ्रीबीज कहकर खारिज न किया जाए।न्यायालय ने भी शिक्षा और स्वास्थ्य को संवैधानिक दायित्व के रूप में स्पष्ट किया।इसलिए मूल प्रश्न यह है कि लक्षित, आवश्यकता-आधारित, पारदर्शी और वित्तीय रूप से टिकाऊ योजनाओं और सार्वभौमिक,अस्थायी, चुनावी लाभ वाली योजनाओं के बीच रेखा कैसे खींची जाए।यदि इस प्रवृत्ति को नियंत्रित करने हेतु कठोर कानून बनाने की बात हो, तो उसका उद्देश्य प्रतिबंध मात्र नहीं बल्कि संतुलन स्थापित करना होना चाहिए। संभावित कानून का नाम हो सकता है,राष्ट्रीय राजकोषीय उत्तरदायित्व एवं चुनावी लोकलुभावन व्यय विनियमन अधिनियम। इस अधिनियम के अंतर्गत प्रत्येक चुनावी घोषणा के लिए अनिवार्य वित्तीय स्रोत-प्रमाणन,स्वतंत्र आर्थिक मूल्यांकन और दीर्घकालिक प्रभाव विश्लेषण की व्यवस्था की जा सकती है। एक स्वतंत्र चुनावी व्यय एवं लोकलुभावन नीति मूल्यांकन आयोग गठित किया जा सकता है, जो घोषणापत्रों की व्यवहार्यता पर सार्वजनिक रिपोर्ट जारी करे। साथ ही, राज्य के बजट का एक न्यूनतम प्रतिशत पूंजीगत व्यय हेतु सुरक्षित रखने का संवैधानिक प्रावधान भी किया जा सकता है।साथ ही यह भी आवश्यक है कि पारदर्शिता को बढ़ाया जाए। यदि कोई राज्य मुफ्त बिजली देना चाहता है,तो उसे यह स्पष्ट करना चाहिए कि उसका वित्तीय स्रोत क्या है, कितनी अवधि तक योजना चलेगी,और उसका ऋण- जीडीपी अनुपात पर क्या प्रभाव पड़ेगा।संसद और विधान सभाओं में पूर्व-अनुमोदन और सार्वजनिक विमर्श की बाध्यता लोकतांत्रिक उत्तरदायित्व को सुदृढ़ करेगी।न्यायालय का हस्तक्षेप नीति-निर्माण में प्रत्यक्ष दखल नहीं बल्कि संवैधानिक मर्यादा की तत्परता से याद दिलाना है।

साथियों बात अगर हम इस मुद्दे पर एक सख्त कानून बनाए जाने की करें तो मेरा सुझाव है क़ि भारत में चुनावों के दौरान राजनीतिक दलों द्वारा रेवड़ियां (मुफ़्त उपहार, नकद लाभ, वादों के रूप में प्रत्यक्ष प्रलोभन) बाँटने का मुद्दा अक्सर लोकतांत्रिक नैतिकता और वित्तीय अनुशासन से जोड़ा जाता है। इस संदर्भ में यदि अत्यंत सख्त और निवारक कानून की परिकल्पना की जाए, तो वें प्रभावशाली,स्पष्ट और दंडात्मक भावना वाले होने चाहिए। मेरे विचार से संभावित कठोर विधेयक/अधिनियम नाम सुझाए जा रहे हैं(1)लोकतांत्रिक शुचिता एवं चुनावी प्रलोभन निषेध अधिनियम, 2026 (2) चुनावी रेवड़ी उन्मूलन एवं कठोर दंड अधिनियम, 2026 (3) राजकोषीय अनुशासन एवं लोकलुभावन वादा नियंत्रण अधिनियम, 2026(4)चुनाव प्रलोभन अपराध नियंत्रण एवं दंड संहिता अधिनियम, 2026 (5)राजनीतिक वित्तीय पारदर्शिता एवं मुफ्त वितरण प्रतिबंध अधिनियम, 2026 (6) जनमत प्रलोभन निषेध एवं लोकधन संरक्षण अधिनियम, 2026(7) चुनावी लोकलुभावन घोषणापत्र विनियमन एवं दंड अधिनियम, 2026(8)लोकतंत्र संरक्षण (अवैध चुनावी लाभ वितरण निषेध) अधिनियम, 2026 (9) राजनीतिक जवाबदेही एवं अनुदान दुरुपयोग निवारण अधिनियम, 2026 (10) चुनावी भ्रष्ट आचरण (मुफ्त वस्तु/नकद प्रलोभन) पूर्ण प्रतिबंध अधिनियम, 2026

साथियों बात अगर हम इस मुद्दे को अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में समझने की करें तो भी यह प्रश्न नया नहीं है। कई लोकतांत्रिक देशों में चुनावी वादों की सीमा तय करने के लिए राजकोषीय नियम बनाए गए हैं। यूरोपीय संघ में सदस्य देशों पर घाटे और ऋण की सीमा संबंधी मानक लागू हैं। लैटिन अमेरिकी देशों ने अतीत में लोकलुभावन व्यय के कारण आर्थिक संकट झेले हैं, जहाँ अत्यधिक सब्सिडी और मुफ्त वितरण ने मुद्रास्फीति और मुद्रा अवमूल्यन को जन्म दिया। भारत जैसे उभरते अर्थतंत्र के लिए यह चेतावनी है कि अल्पकालिक राजनीतिक लाभ दीर्घकालिक आर्थिक अस्थिरता का कारण न बन जाए।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे क़ि प्रश्न यह नहीं कि कल्याणकारी राज्य होना चाहिए या नहीं, भारत का संविधान स्वयं एक कल्याणकारी राज्य की परिकल्पना करता है। प्रश्न यह है कि क्या कल्याण दीर्घकालिक सशक्तिकरण की दिशा में है या अल्पकालिक निर्भरता की ओर? क्या संसाधनों का उपयोग उत्पादक परिसंपत्तियों में हो रहा है या उपभोग में?क्या करदाताओं के धन का उपयोग पारदर्शी और न्यायसंगत है? और क्या भविष्य की पीढ़ियों पर ऋण का बोझ अनावश्यक रूप से डाला जा रहा है?न्यायपालिका की हालिया टिप्पणियाँ इस बहस को एक नई गंभीरता प्रदान करती हैं।यदि कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका मिलकर एक संतुलित ढांचा विकसित करें जहाँ सामाजिक न्याय,आर्थिक अनुशासन और लोकतांत्रिक नैतिकता का समन्वय हो तो भारत न केवल अपनी राजकोषीय स्थिरता को सुरक्षित रख सकेगा, बल्कि वैश्विक स्तर पर एक उत्तरदायी लोकतंत्र का उदाहरण भी प्रस्तुत करेगा। रेवड़ी संस्कृति पर नियंत्रण केवल कानून का विषय नहीं,बल्कि राजनीतिक इच्छाशक्ति,नागरिकजागरूकता और आर्थिक विवेक का सम्मिलित परिणाम होगा। यही संतुलन भारत को सशक्त, आत्मनिर्भर और दीर्घकालिक विकास की दिशा में अग्रसर कर सकता है।

राज्यसभा द्विवार्षिक चुनाव 2026 के वर्षपर्यंत सियासी मायने

कमलेश पांडेय

चिरंजीवी सदन 'राज्यसभा' के द्विवार्षिक चुनाव के लिए वर्ष 2026 में विभिन्न चरणों में खाली होने वाली कुल 71-75 सीटों के लिए चुनाव होंगे जो पूरे वर्ष अप्रैल और नवंबर में भरी जाएंगी। लिहाजा, इन चुनावों के राजनीतिक मायने गहन व अहम हैं, क्योंकि ये चुनाव जहां एनडीए की बहुमत मजबूती बढ़ा सकते हैं, वहीं विपक्ष को भी कमजोर कर सकते हैं। इससे भाजपा व उसके साथियों का चुनावी हौसला बढ़ेगा।

जहां तक इनकी प्रमुख तारीखों की बात है तो चुनाव आयोग ने पहले चरण में 10 राज्यों की 37 सीटों पर चुनाव घोषित किए हैं। जिसके लिए अधिसूचना 26 फरवरी को जारी होगी, नामांकन 5 मार्च तक, और मतदान-मतगणना 16 मार्च 2026 को। जबकि बाकी सीटें नवंबर में भरी जाएंगी, जिसमें उत्तर प्रदेश की 10 सीटें सबसे महत्वपूर्ण हैं। इन दस चुनावी राज्यों में से 6 राज्यों में एनडीए की सरकार है, जबकि 4 राज्यों में इंडी गठबंधन के घटक दल सरकार में हैं। जहां तक राज्यवार सीटों की बात है कि पहले चरण में महाराष्ट्र की 7, तमिलनाडु की 6, पश्चिम बंगाल की 5, बिहार की 5, ओडिशा की 4, असम की 3, हरियाणा की 2 और छत्तीसगढ़ की 1 सीटें शामिल हैं, जबकि दूसरे चरण में उत्तरप्रदेश की 10 और झारखंड, आंध्रप्रदेश और तेलंगाना आदि की 20 से अधिक सीटों के लिए नवम्बर में चुनाव होंगे।

जहां तक उच्च सदन राज्यसभा में वर्तमान दलगत स्थिति की बात है तो राज्यसभा में कुल 245 सीटें हैं, जहां भाजपा के 103 और एनडीए के 121-129 सांसद हैं। जबकि विपक्षी इंडिया (INDIA) ब्लॉक के पास 78-80 सीटें हैं, जिसमें कांग्रेस के 27 सांसद हैं। जहां तक इन चुनावों के राजनीतिक प्रभाव की बात है तो इन चुनावों में एनडीए को 7-9 या इससे अधिक सीटों का लाभ मिलने का अनुमान है, जिससे उनकी संख्या 145 तक पहुंच सकती है जबकि विपक्ष को 5 सीटें खोने का खतरा, खासकर बिहार, महाराष्ट्र में है। इससे भाजपा को राज्यसभा में अब कोई भी विधेयक पास करना आसान होगा और सुपरमेजॉरिटी की ओर बढ़त भी उसे मिलेगी।

सवाल है कि इन चुनावों में एनडीए को कितनी सीटें मिलने की संभावना है तो राजनीतिक विश्लेषकों को अनुमान है कि एनडीए को 2026 के राज्यसभा चुनावों में कुल 48 या इससे अधिक सीटें मिलने की संभावना है, जिससे उनकी ताकत 129 से बढ़कर 140+ हो सकती है। पहले चरण के 37 सीटों पर 5-7 का लाभ अनुमानित है, जबकि उत्तर प्रदेश जैसे बाद के चरणों से भी उसे अतिरिक्त मजबूती मिलेगी। राजनीतिक विश्लेषकों के अनुसार, 71-75 खाली सीटों में से एनडीए को नेट 7-9 या 48 सीटें हासिल हो सकती हैं। चूंकि वर्तमान में एनडीए के 121-129 सदस्य हैं, इसलिए चुनाव बाद 145 तक पहुंचने की उम्मीद है। वहीं बाद के जून-नवम्बर वाले दूसरे चरणों के प्रभाव की बात है तो वे भी स्पष्ट है। उत्तर प्रदेश की 10 सीटों में भाजपा को 7-8 मिलनी संभावित है, जबकि ओडिशा, तेलंगाना आदि में स्थिरतामिलेगी।, कुल मिलाकर सुपरमेजॉरिटी (123+) पक्की होगी। जबकि विपक्ष को 5 नुकसान होगा।

जहां तक इन चुनावों में इंडिया गठबंधन को कितनी सीटें मिलने की बात हैं तो इंडिया गठबंधन को 2026 के राज्यसभा चुनावों में कुल 71-75 सीटों में से नेट 5 का नुकसान हो सकता है, जिससे उनकी संख्या 80 से घटकर 75 रह जाएगी। पहले चरण के 37 सीटों पर भी नुकसान की स्थिति बनी हुई है, हालांकि कुछ राज्यों में स्थिरता संभव है। विश्लेषकों के अनुसार, इंडिया ब्लॉक वर्तमान 80 सीटों से 75 पर सिमट सकता है। कांग्रेस को विशेष रूप से 8 सीटें खोने का खतरा, जिसमें मल्लिकार्जुन खरगे, दिग्विजय सिंह की सीटें भी शामिल हैं। वहीं

बाद के चरणों का प्रभाव भी उसपर पड़ेगा। क्योंकि उत्तर प्रदेश की 10 सीटें में से सपा को 2-3 मिलनी संभावित हैं, लेकिन कुल नुकसान होगा। जबकि कर्नाटक, झारखंड में 1-1 सीटों का नुकसान संभव है। ओवरऑल, एनडीए के लाभ से इंडिया कमजोर होगा।

जहां तक राज्यवार स्थिति की बात है तो बिहार में राज्यसभा की 5 सीटों के लिए चुनाव होगा। अभी आरजेडी के 2, जेडीयू के 2 और एक सांसद राष्ट्रीय लोक मोर्चा का है। बिहार में 243 सदस्यीय विधानसभा में एक सीट पर जीत के लिए 41 विधायकों के समर्थन की जरूरत है। एनडीए के पास 202 विधायक हैं और एनडीए के खाते में 4 सीटें सुनिश्चित हैं, जबकि 5 के लिए जोर आजमाइश बढ़ेगी। क्योंकि यहां 35 सीटों के साथ I.N.D.I.A. एक भी सीट अपने बल पर जीतने की स्थिति में नहीं है, ऐसे में 5 विधायकों वाले AIMIM की भूमिका अहम हो जाती है।

यदि पूरा विपक्ष एकजुट होता है तो बिहार में विपक्ष के पास कुल 41 विधायक हो जाते हैं और विपक्ष एक सीट निकाल सकते हैं। ऐसे में यह चुनाव तेजस्वी यादव के नेतृत्व और विपक्षी एकता की के लिए अग्निपरीक्षा होगा।

वहीं महाराष्ट्र विधानसभा में भाजपा के नेतृत्व में सत्तारूढ़ महायुति आसानी से 6 सीटों पर जीत हासिल कर लेगा, वहीं 7वीं सीट के लिए वोटिंग हो सकती है। इसलिए महाराष्ट्र की राजनीतिक के चाणक्य कहे जाने वाले शरद पवार का संसदीय सफर थम सकता है। जबकि हरियाणा से बीजेपी के दो सदस्य किरण चौधरी और रामचंद्र जांगरा का कार्यकाल 9 अप्रैल को खत्म हो रहा है। इसी प्रकार ओडिशा की 4 सीटों पर चुनाव होंगे, जहां अभी 2 सीट बीजेपी और 2 बीजेडी के पास है लेकिन विधानसभा चुनाव के नतीजों को देखें तो बीजेपी की सीटों में इजाफा होना तय है। इसी प्रकार छत्तीसगढ़ में दोनों सीटें अभी कांग्रेस के पास हैं और यहां भी बीजेपी जीत दर्ज करने की स्थिति में है।

रही बात तेलंगाना की तो वहां से कांग्रेस के अभिषेक मनु सिंघवी रिटायर हो रहे हैं और बीआरएस के एक कैंडिडेट का कार्यकाल पूरा हो रहा है। तेलंगाना में कांग्रेस दोनों सीटें जीत सकती है और हिमाचल में भी कांग्रेस एक सीट जीत सकती है। असम से तीन पश्चिम बंगाल से 5 और तमिलनाडु से भी 6 राज्यसभा सीटों के लिए चुनाव होंगे। चूंकि इन तीनों राज्यों में विधानसभा चुनाव होने हैं लेकिन विधानसभा चुनाव से पहले इन राज्यों में सत्तारूढ़ पार्टियों के पास राज्यसभा में अपना संख्याबल कायम रखने का मौका मिलेगा।

यही वजह है कि क्रॉस वोटिंग से निपटने की चुनौती विपक्ष के सामने रहेगी। क्योंकि राज्यसभा चुनाव में राजनीतिक पार्टियों के लिए अपने अपने विधायको को एकजुट रखने की चुनौती हमेशा होती है। पिछले कुछ राज्यसभा चुनावों को देखें तो हरियाणा में कांग्रेस को क्रॉस वोटिंग का सामना करना पड़ा था। इसलिए आने वाले राज्यसभा चुनावों को देखें तो चाहे हरियाणा हो, बिहार हो, यहां पर कांग्रेस और सहयोगी दलों को फूंक-फूंक करकदम रखना होगा। हालांकि कुछ सीटों पर तो रिजल्ट पहले से ही तय है, लेकिन अगर विपक्ष क्रॉस वोटिंग को रोक पाता है तो उसके हाथ भी कुछ सीट आ सकतीहैं। चूंकि राज्यसभा में बीजेपी और एनडीए का प्रभाव लगातार बढ़ता जा रहा है, इसलिए इस वर्ष 75 सीटों पर होने वाले चुनावों में विपक्ष यदि कारगर रणनीति नहीं बनाता है तो फिर इंडिया गठबंधन वाले कांग्रेस और उसके सहयोगियों की संख्या और घट सकती है, इतना तय है।

जहां तक इन चुनावों में प्रमुख नेताओं के प्रभावित होने की बात है तो कई दिग्गजों का कार्यकाल समाप्त हो रहा है जिसमें राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एसपी) के शरद पवार, कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, जदयू नेता हरिवंश, भाजपा के केंद्रीय मंत्री हरदीप पुरी (6 मंत्री सहित) शामिल हैं। वहीं बीएसपी राज्यसभा से साफ हो सकती है क्योंकि उत्तर प्रदेश में भाजपा को 7, सपा को 2 सीटें मिलने की संभावना है। वहीं राजद (RJD) और बीजद (BJD) समेत कई दलों की सीटें घटेगी।

वरिष्ठ पत्रकार व राजनीतिक विश्लेषक

वर्ग संघर्ष समकालीन परिदृश्य

विवेक रंजन श्रीवास्तव

वर्ग संघर्ष मानव इतिहास की मूल शक्तियों में से एक है जिसने समाजों की संरचना बदली और विश्वव्यापी क्रांतियों का सूत्रपात किया। यूरोप में सामंतवाद से पूंजीवाद का संक्रमण, इंग्लैंड की औद्योगिक क्रांति के बाद मजदूर आंदोलन, 1789 की फ्रांसीसी क्रांति, 1917 की रूसी क्रांति तथा चीन, क्यूबा और लैटिन अमेरिकी आंदोलनों में उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण व श्रमशक्ति के शोषण के विरुद्ध संघर्षों ने राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संरचनाओं को उलट दिया। वर्ग विरोध की इसी वैश्विक पृष्ठभूमि में भारत का वर्ग संघर्ष केवल पूँजी और श्रम तक सीमित नहीं, बल्कि वर्ण व्यवस्था, जातीय वर्चस्व, भूमि संबंधों और राजनीति तथा सत्ता की जटिल गाँठों से जुड़ा है।

भारत में वर्ग संघर्ष वर्ण जाति, औपनिवेशिक शोषण, औद्योगिक पूँजीवाद और वैश्विक पूँजी की बहुस्तरीय प्रक्रिया है जो आज भी सक्रिय है। प्राचीन मध्यकालीन समाज में वर्ण व्यवस्था ने श्रम विभाजन व आर्थिक पदानुक्रम को वैध बनाया। कृषि अर्थ व्यवस्था में जमींदार, सामंत व उच्च वर्णीय किसान वर्ग का प्रभुत्व रहा, जबकि भूमि हीन श्रमिक, निम्न जातियाँ व वंचित समुदायों का कोई अधिकार न था। विद्रोहों की अंतर्धारा में वर्गीय असमानता व संसाधन कब्जे का आक्रोश झलकता था।

ब्रिटिश उपनिवेशवाद ने जमींदारी व राजस्व व्यवस्था तोड़ी, रैयतों, किसानों व जमींदारों में तनाव पैदा किया तथा उद्योग, रेलवे व खदानों से मजदूर वर्ग का निर्माण हुआ। कर संग्रह, कच्चा माल व सस्ता श्रम शोषण से किसान व आदिवासी विद्रोह भड़के। 19वीं सदी के अंत में संगठित मजदूर वर्ग ने कारखाना मालिकों व औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध संघर्ष किया। प्रथम विश्व युद्ध, रूसी क्रांति व आर्थिक संकट ने वर्ग चेतना जगाई, अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस बनी।

स्वाधीनता आंदोलन में राष्ट्रीय नेतृत्व की राजनीतिक मुक्ति प्राथमिकता के साथ मजदूर किसान संगठनों ने भूमि सुधार, जमींदारी उन्मूलन व समानता माँगी। आदिवासी, किसान व मजदूर हड़तालों ने वर्गीय असंतोष दिखाया। स्वतंत्रता के बाद संविधान ने समाजवादी पथ अपनाया, पर भूमि स्वामियों, उच्च जातीय व पूँजीपति वर्ग का वर्चस्व कायम रहा। आधे अधूरे भूमि सुधार व नक्सल आंदोलन ने असमान भूमि वितरण व जातीय उत्पीड़न उजागर किया। शहरों में मजदूर अधिकार मिले, पर सत्ता अक्सर पूँजी के पक्ष में रहा।

भारत में वर्ग संघर्ष वर्ण जाति से घुला हुआ है। डॉ आंबेडकर व मार्क्स के संवाद में कहा गया कि वर्ण संघर्ष के बिना वर्ग संघर्ष अधूरा है। सवर्ण वर्चस्व ने दलित, पिछड़े, आदिवासी व अल्प संख्यकों की अधीनता बनाए रखी। उदारीकरण ने मध्यवर्ग व पूँजीपतियों को लाभ दिया पर असंगठित मजदूर, लघु किसान व अनुबंध श्रमिक असुरक्षित हुए। वर्ग संघर्ष खेत खदानों, सर्विस सेक्टर व झुग्गियों तक फैला रहा।

यहाँ वर्ग, आर्थिक स्थिति के साथ सांस्कृतिक पूँजी, जातीय पहचान व राजनीतिक पहुँच निर्धारित करता है। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में सवर्ण विरोधी नारे वर्ण व वर्ग तनावों का संक्षेप हैं। बहुजन समाज पार्टी के उदयकाल में प्रतिनिधित्व राजनीति थी। विश्वनाथ प्रताप सिंह के समय मंडल विरोधी आंदोलन आरक्षण के विरुद्ध मध्यम वर्गीय आक्रोश था। आज यूजीसी नीतियों के विरुद्ध प्रतिरोध निजीकरण व बाजारीकरण से जुड़ा हुआ है जो वंचितों को प्रभावित करता है।

मंडल आंदोलन अवसरो की साझेदारी के विरुद्ध था जबकि वर्तमान स्वर संरचनात्मक असमानताओं पर हैं। सवर्ण विरोधी भाषा संरचना विरोध से द्वेष की ओर मुड़ सकती है। यह चिंताजनक है क्योंकि युवा राष्ट्र की दिशा तय करते हैं। विश्वविद्यालय असहमति पोषित करें, पर वह विवेकपूर्ण हो, वर्ग ध्रुवीकरण लोकतंत्र को प्रभावित करता है।

अंततः वर्ग संघर्ष का मूल प्रश्न, संसाधनों व सत्ता पर नियंत्रण है। अतः वर्ग संघर्ष स्वरूप बदल कर फिर फिर प्रगट होता रहता है। तार्किक, सम वितरण, नैसर्गिक न्याय ही वर्ग संघर्ष का किंचित समाधान है।

विदेशी नागरिकता, विदेशी जुड़ाव और लोकतांत्रिक जवाबदेही

गजेंद्र सिंह

लोक नीति विश्लेषक

हाल के दिनों में आसाम से कांग्रेस सांसद गौरव गोगोई की पत्नी एलिज़ाबेथ कोलबर्न की विदेशी नागरिकता और उनके पेशेवर संबंधों को लेकर चर्चा हुई है। इसी के साथ यह सवाल भी उठा है कि उनके दोनों बच्चों की नागरिकता को लेकर कोई स्पष्ट और सार्वजनिक जानकारी अब तक क्यों सामने नहीं आई है। यह बहस किसी व्यक्ति के निजी जीवन में झाँकने के लिए नहीं बल्कि सार्वजनिक पद पर बैठे लोगों से जुड़ी पारदर्शिता और राष्ट्रीय हित जैसे बड़े सवालों से जुड़ी है।

लोकतंत्र में जनप्रतिनिधियों से अपेक्षा केवल क़ानूनी अनुपालन तक सीमित नहीं होती। उनसे यह भी अपेक्षित होता है कि वे सार्वजनिक विश्वास के उच्चतम मानकों पर खरे उतरें, विशेषकर तब, जब बात नागरिकता, विदेशी पेशेवर संबंधों, दोहरी निष्ठाओं या संभावित हित-संघर्ष की हो—इन विषयों पर अस्पष्टता स्वयं में संदेह को जन्म देती है। इसलिए ऐसी जानकारियों का स्पष्ट, सत्यापित और सार्वजनिक रूप से उपलब्ध होना लोकतांत्रिक जवाबदेही का एक अनिवार्य तत्व माना जाता है।

यह प्रश्न भारत में नया नहीं है। पिछले दो दशकों में अनेक वरिष्ठ राजनेताओं, संवैधानिक पदाधिकारियों और शीर्ष नौकरशाहों के पारिवारिक सदस्यों—विशेषकर बच्चों—का विदेश में अध्ययन, निवास या पेशेवर करियर सार्वजनिक रूप से रिपोर्ट होता रहा है। उदाहरणस्वरूप, पूर्व रिज़र्व बैंक गवर्नर रघुराम राजन ने स्वयं स्वीकार किया कि उनका पेशेवर और पारिवारिक जीवन लंबे समय तक अमेरिका में केंद्रित रहा। इसी प्रकार विदेश मंत्री एस. जयशंकर के पुत्र ध्रुव जयशंकर ने जॉर्जटाउन यूनिवर्सिटी से शिक्षा प्राप्त की और अमेरिका में कार्य व निवास से जुड़े रहे हैं. राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजित डोभाल के पुत्र विवेक डोभाल के ब्रिटिश नागरिक होने और इंग्लैंड में रहने की रिपोर्ट्स सामने आई हैं. वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल के पुत्र ध्रुव गोयल ने हार्वर्ड से पढ़ाई कर न्यूयॉर्क में एक वेंचर फंड स्थापित किया. वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण की पुत्री वांग्मयी परकाला ने अमेरिका की नॉर्थवेस्टर्न यूनिवर्सिटी से शिक्षा प्राप्त की. पेट्रोलियम मंत्री हरदीप सिंह पुरी की पुत्री तिलोत्तमा ने यूनिवर्सिटी ऑफ़ वारविक से पढ़ाई की और अमेरिका में बसने की जानकारी सार्वजनिक डोमेन में रही है।

इसी तरह, राजद नेता अब्दुल बारी सिद्दीकी का अपने बच्चों को विदेश में बसने की सलाह वाला बयान सार्वजनिक विवाद का विषय बना. भाजपा नेता संजय धोत्रे के पुत्र नकुल धोत्रे ने कैलिफ़ोर्निया से इंजीनियरिंग कर वहीं बसने का रास्ता चुना. राजद प्रमुख लालू प्रसाद यादव के पौत्र और रोहिणी आचार्य के पुत्र आदित्य ने सिंगापुर की अनिवार्य नेशनल सर्विस के तहत बेसिक मिलिटरी ट्रेनिंग शुरू की. प्रियंका गांधी वाड्रा के दोनों बच्चों—रायहान और मिराया—ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा ग्रहण की. कांग्रेस सांसद शशि थरूर के जुड़वाँ पुत्र ईशान और कनिष्क थरूर का पालन-पोषण और करियर विदेशों में रहा है तथा सलमान खुर्शीद के बच्चों की शिक्षा और पेशेवर गतिविधियाँ भी यूके और अमेरिका से जुड़ी रही हैं। ये उदाहरण दर्शाते हैं कि वैश्विक शिक्षा और करियर आज भारतीय सार्वजनिक जीवन की एक स्थापित वास्तविकता बन चुके हैं।

प्रशासनिक तंत्र में भी ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जहाँ कैबिनेट सचिव स्तर के अधिकारियों, संवैधानिक संस्थाओं से जुड़े नौकरशाहों और नीति-निर्माताओं के बच्चे पश्चिमी देशों में बस चुके हैं, अक्सर उच्च शिक्षा या निजी कॉर्पोरेट करियर के कारण। यह अपने आप में न तो अपराध है और न ही किसी व्यक्ति की देशभक्ति पर सीधा प्रश्न लेकिन नीतिगत स्तर पर मूल प्रश्न कुछ और है—क्या संवेदनशील सार्वजनिक पदों पर बैठे व्यक्तियों के लिए पारिवारिक विदेशी जुड़ाव, नागरिकता स्थिति और वैश्विक हितों की पारदर्शी घोषणा का कोई स्पष्ट और समान मानक होना चाहिए?

यहीं से चीन की तथाकथित "नेकेड लीडरशिप पॉलिसी" की चर्चा प्रासंगिक हो जाती है। यह नीति उन अधिकारियों पर लागू होती है जिनके पति/पत्नी या बच्चे विदेश में रहते हैं, विदेशी नागरिकता रखते हैं या स्थायी निवास के धारक हैं। चीनी कम्युनिस्ट पार्टी का तर्क रहा है कि ऐसे अधिकारी विदेशी प्रभाव, ब्लैकमेल, हितों के टकराव और राष्ट्रीय सुरक्षा जोखिमों के प्रति अपेक्षाकृत अधिक संवेदनशील हो सकते हैं। इसी सोच के तहत 2010 के बाद चीन ने ऐसे अधिकारियों को संवेदनशील पदों से हटाने, पदोन्नति रोकने, अतिरिक्त निगरानी लागू करने और कई मामलों में अनिवार्य स्थानांतरण जैसे कदम उठाए। भ्रष्टाचार-विरोधी अभियानों में इस नीति का उपयोग एक संदेश के रूप में किया गया—कि राज्य सत्ता और निजी जीवन के वैश्विक हितों का टकराव स्वीकार्य नहीं है। निस्संदेह, चीन का मॉडल लोकतांत्रिक नहीं है और भारत जैसे संवैधानिक लोकतंत्र में उसकी नकल संभव भी नहीं। लेकिन इसका मूल सिद्धांत—नेतृत्व में पारदर्शिता, संस्थागत निष्ठा और बाहरी प्रभाव से दूरी—आज वैश्विक विमर्श का हिस्सा बन चुका है।

अतः प्रश्न यह नहीं है कि भारत को चीन जैसी नीति अपनानी चाहिए या नहीं। असली प्रश्न यह है कि एक लोकतांत्रिक गणराज्य में, जहाँ सत्ता जनता के विश्वास पर टिकी है, संवेदनशील सार्वजनिक पदों पर बैठे लोगों से पारिवारिक और वैश्विक हितों को लेकर कितनी पारदर्शिता अपेक्षित है? यह बहस व्यक्तियों को कटघरे में खड़ा करने के लिए नहीं बल्कि राष्ट्रीय हित, संस्थागत ईमानदारी और लोकतांत्रिक जवाबदेही के मानकों को स्पष्ट करने के लिए आवश्यक है।

कांग्रेस ने पूर्व मंत्री एवं उनके पत्नी की गिरफ्तारी पर पुलिस की आलोचना की, अविलम्ब रिहा करने की मांग की

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

रांची , झारखंड प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष केशव महतो कमलेश ने प्रेस वार्ता कर पूर्व मंत्री योगेन्द्र साव और उनकी पत्नी, पूर्व विधायक निर्मला देवी की गिरफ्तारी का विरोध किया। उन्होंने कहा कि दोनों शांतिपूर्ण धरना पर बैठे थे और ग्रामीणों के हक-अधिकार की लड़ाई लड़ रहे थे, तभी पुलिस ने उन्हें हिरासत में ले लिया। कांग्रेस ने इसे लोकतांत्रिक अधिकारों का हनन बताते हुए तत्काल रिहाई की मांग की है।

केशव महतो ने कहा कि योगेंद्र साव और निर्मला देवी एन टी पी सी द्वारा अधिग्रहित जमीन के उचित मुआवजे को लेकर आंदोलन कर रहे थे। प्रभावित ग्रामीणों से बातचीत का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि जमीन अधिग्रहण से पहले लोग सामान्य जीवन जी रहे थे, लेकिन अधिग्रहण के बाद कई परिवार अब तक मुआवजे से वंचित हैं।

उन्होंने बताया कि हजारीबाग के प्रशासनिक अधिकारियों से इस संबंध में बातचीत की गई है और दोनों नेताओं की रिहाई की मांग रखी गई है। साथ ही राज्य सरकार के रवैये पर सवाल उठाते हुए उन्होंने आरोप लगाया कि हेमंत सरकार में अधिकारी कानून का पालन नहीं कर रहे हैं।

उल्लेखनीय है कि 19 फरवरी की दोपहर करीब तीन बजे पुलिस ने योगेंद्र साव और निर्मला देवी को हिरासत में लिया। योगेंद्र साव पर बड़कागांव, केरेडारी और पगार ओपी समेत कई थानों में मामले दर्ज हैं। वे 31 दिसंबर 2025 से चट्टी बरियातू कोल माइंस परियोजना को लेकर धरने पर बैठे थे और पुलिस ने उन्हें धरना स्थल से ही गिरफ्तार किया।

ताज ,मंत्रालय देने व छीनने वाली मां पाउडी आज भी प्रासंगिक है झारखंड की राजनीति में

चर्चा का विषय बना है दो मंत्री एक सांसद द्वारा पाउडी उपासक पूर्व विधायक के पूजन स्थल पर स्कूल बना डालना

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्तंभकार झारखंड

प्राचीन सिंहभूम जिसका एक शहर भगवान कृष्ण के उन सोलह कला यानी सरायकेला , उसका संबंध पुराण काल से उत्कल से रहा है । स्कन्द पुराण के विष्णु खंड के 26 वें एवं 27 वें श्लोक में स्वर्णरेखा तथा ऋषिकुल्या नदी बीच की भूमि को ओड्र देश कहा गया है ।ये ओड्र शब्द ओड़िया वीरों के संदर्भ में प्रचलित रहा है जो पुराना नाम रहा ओडिशा का । जहां दारुब्रम्ह(लकड़ी देहधारी) देवता के रूप में जगन्नाथ विराजमान हैं । आप पुरी धाम में भैरव होते और भैरवी दुर्गा रूपी विमला आज भी पूजी जाती है वहीं । मां विमला एवं जगन्नाथ हर ओडिया देशी रियासतों की देवी देव माने जाते है। जहां उनकी पर्याय नाम कहीं पाउडी तो कहीं कटक चंडी, कहीं समलेश्वरी आदि वर्णित है ।आजादी के बाद आज 24 देशी राज्य ओडिशा तथा 2 झारखंड स्थित है । ये झारखंड में अब सरायकेला व खरसावां है ,कालांतर में राजनीतिक कारण वश यहां रखे गये पर आज नौबत जब ओडिया को मिटाने की जारी है वैसे में इलाके की अधिष्ठात्री देवी को ही लोगों ने चुनाव में उतार दिया है । पालिका , पंचायत चुनाव प्रचार कुछ ऐसा लगने लगा है सरायकेला में ।

यहां सिंहभूम की इष्टदेवी मां पाउडी देवी ही अब देखा जय तो चुनाव लड़ रही है। मूल वासियों में राजा सरायकेला का चुनाव प्रचार कुछ इस देवी से आशिर्वाद प्राप्त कर लडने की बात प्रचार वाहन में तेज आवाज में गुंज रही हैं, जहां लोग कायल हैं इस पर । आखिर कौन है यह देवी , रहती सरायकेला में कहां । सरकार बनने बिगाड़ने में अभिप्राय क्या रही है । बड़ा ही रोचक प्रसंग है । रूठ गयी तो कुर्सी तक छीने जाने के चर्चें राजनीति पटल में आज भी अटे पड़े हैं ।

जय मां पाउडी , जय जगन्नाथ , गजपतिय राजा का नाम लेते ही सरायकेला वासी अपनी मौलिकता ,अपनापन , ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को लेकर खींचे चले आ रहे हैं । मानो आज भी वे अपने अन्दर वही अनुभव करते हैं जो राजे महाराजे काल खंड में उनके पूर्वज किया करते थे । करें भी क्यों नहीं मां पाउडी का आंगन यानी राज महल स्थित कोर्ट उन दिनों दोषियों को फांसी तक देने का औकात रखता था । ।कहा जाता है कि मुग़ल , मराठा , अंग्रेज यहां कभी नहीं आ पाये ।यूनियन जैक नहीं लहरा पाया सरायकेला मिट्टी में तब उस देवी बदौलत । राजा प्रताप आदित्य सिंहदेव एवं स्थानीय ओडिया भाषी उम्मीदवार मां पाउडी देवी को नमन करना नहीं भूलते प्रचार में ।वह सिंहभूम की इष्टदेवी जो ठहरी , पहाड़ों में रहने वाली पार्वती मां । उससे भी सुन्दर राजा की पूजा प्रजा द्वारा राम राज्य को अनायास याद दिला देता ।

विगत दिनों का चर्चित घटना से समुचा राजनीतिक माहौल स्थम्भिभूत है । झारखंड के एक पूर्व विधायक अनंत राम टूडू का मां पाउडी के बड़े भक्त हैं । उनके पाउडी स्थल पर सरकार के एक बड़े मंत्री की नजर गड गयी। तब दो मंत्री एवं एक सासंद ने मिलकर आव देखा न ताव उक्त पाउडी जमीन जहां पूर्व विधायक अनंत राम टूडू के पिता मां पाउडी को पूजते थे , वास्तव में वह वीर शासक जगन्नाथ भूईयां का पाउडी स्थल जमीन रहा ।। वहीं पर एकलव्य विधालय को जबरन स्थापित करवा दिया मंत्रियों ने । पूर्व विधायक अनंत राम टूडू ने उपायुक्त सरायकेला से लेकर कोर्ट की दरवाजा खटखटाया पर नतीज़ा ढाक के तीन पात निकाला । जब चुनाव आया तो संबंधित केंद्रीय मंत्री चुनाव हार गये, एक समुदाय ने उनकी बड़ी बेइज्जती कराई । सरायकेला के विधायक मंत्री पद गवां बैठे । उनको लेकर पार्टी में दरार पड़ने की नौबत आयी ।अंततः दुसरे पार्टी में जा घुसे पर वहां भी अब कद्र नहीं मिलना चर्चा का विषय बना हुआ है ।रही बात सांसद महोदया की उनकी सीट भी नहीं बची । लोग इन्हे अब मां पाउडी की अभिशाप मान रहे हैं, जहां राजनीति में हर किसी के लिए कद-काठी आज भी तय किया करती है मां पाउडी ,राजमहल में वह सरायकेला , सिंहभूम की ईष्ट देवी है । संभवतः यही वजह है कि आज चुनाव में मां पाउडी सुर्खियों में है सरायकेला में साथ ही उनके अनन्य भक्त राजा साहब सरायकेला प्रताप आदित्य ।

14 मार्च 2026 को आयोजित होगी राष्ट्रीय लोक अदालत – अमरदीप सिंह बैंस

अमृतसर, 19 फरवरी (साहिल बेरी)

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, अमृतसर द्वारा 14 मार्च 2026 को राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन किया जा रहा है। इस संबंध में आज सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, अमृतसर श्री अमरदीप सिंह बैंस की अध्यक्षता में एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में सभी प्रमुख सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों एवं बीमा कंपनियों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। बैठक का मुख्य उद्देश्य अधिकतम योग्य मामलों के निपटारे हेतु प्रभावी समन्वय एवं सहयोग सुनिश्चित करना था।

श्री बैंस ने जानकारी देते हुए बताया कि राष्ट्रीय लोक अदालत का आयोजन Punjab State Legal Services Authority के कार्यकारी अध्यक्ष एवं Punjab and Haryana High Court के माननीय न्यायमूर्ति अश्विनी कुमार मिश्रा के कुशल मार्गदर्शन एवं गतिशील नेतृत्व में किया जा रहा है। उन्होंने यह भी बताया कि सत्र प्रभाग अमृतसर के प्रशासनिक न्यायाधीश माननीय न्यायमूर्ति रोहित कपूर द्वारा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, अमृतसर को लोक अदालत के सफल आयोजन हेतु निरंतर मार्गदर्शन प्रदान किया जा रहा है।

उन्होंने आगे कहा कि जिला एवं सत्र न्यायाधीश, अमृतसर श्रीमती जतिंदर कौर के समर्पित प्रयासों एवं सतर्क पर्यवेक्षण से राष्ट्रीय लोक अदालत की तैयारियों को और अधिक मजबूती मिली है।

श्री बैंस ने बताया कि राष्ट्रीय लोक अदालत के माध्यम से मामलों का निपटारा त्वरित, सरल एवं निशुल्क तरीके से किया जाता है। आपसी

सहमति के आधार पर दिए गए निर्णय अंतिम एवं बाध्यकारी होते हैं, जिससे पक्षकारों को लंबी कानूनी प्रक्रियाओं से राहत मिलती है। लोक अदालतों के आयोजन से न्यायालयों में लंबित मामलों का बोझ भी कम होता है तथा आपसी सौहार्दपूर्ण समाधान का वातावरण विकसित होता है।

उन्होंने बताया कि समझौता योग्य आपराधिक मामले, यातायात चालान, बैंक वसूली प्रकरण, बिजली बिल संबंधी मामले, पारिवारिक विवाद, मोटर दुर्घटना दावा प्रकरण आदि मामलों का आसानी से निपटारा किया जा सकता है। आम जनता से अपील की गई है कि वे अपने लंबित मामलों को राष्ट्रीय लोक अदालत में प्रस्तुत कर इसका पूर्ण लाभ उठाएं।

बैठक के दौरान बैंकों एवं बीमा कंपनियों के प्रतिनिधियों ने पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया तथा आपसी सहमति के माध्यम से अधिकतम मामलों का निपटारा कर लंबित मामलों की संख्या कम करने और वादियों को त्वरित न्याय उपलब्ध कराने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

दूरभाष : 9910234578
9312170612

सर्व धर्म मित्र मंडल (रजि.)

(दिल्ली राज्य)

कार्यालय : सी–15 ए, डी.डी.ए. फ्लैट्स, शिवाजी एन्कलेव, रघुबीर नगर, नई दिल्ली – 110027

Chairman
Prabhu Dyal
(Ex. ACP, Delhi Police)

President
K. K. Chhabra

Vice President
Pritpal Cingh
Kuldeep Sinath

Gen. Secretary
S. Manohar Singh

Secretary
Gouri Shankar
Ritu Verma
Kanchan Kashap
Reji John

Joint Secretary
Pt Ram Avtar.
Sachin Verma

Cashier
Ved Parkash

Legal Advisor
Rajinder Verma

Press Secretary
V. K. Chaturvedi
Vinod Negi

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) द्वारा - आयोजित एवम् वैष्णवी फाउंडेशन के सौजन्य से -

"पूर्णता निःशुल्क, कोई रजिस्ट्रेशन फीस नहीं, स्वास्थ्य जाँच शिविर

आपकी तंदुरुस्ती हमारा ध्येय,

टोलवा ट्रस्ट द्वारा आयोजित पूर्णतः निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर
* आंखों की जांच,
* रक्तचाप,
* मधुमेह जांच,
* मोतियाबिंद सर्जरी के साथ-साथ
* भारतीय लेंस की सुविधा

इस जांच शिविर मे पूरी तरह से निःशुल्क प्रदान की जाएगी।

इस जांच शिविर में निम्नलिखित अनुभवी एवं विशेषज्ञ डॉक्टर्स एवम् अन्य की निगरानी में जांच,
1. डॉ मनोज कुमार दुबे,
2. रिशु भारद्वाज, एवं
3. विकास राय

जांच शिविर
दिनांक: 1 मार्च (रविवार) 2026
स्थान: गुरुद्वारा सिंह सभा, शहीद भगत सिंह कॉलोनी, शिवाजी एन्क्लेव, दिल्ली 110027
समय: 10:00 AM to 02:00 PM

आप सभी से विनम्र निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पधारें तथा अपने सगे-संबंधियों और मित्रों को भी साथ लेकर आएँ और इस अवसर का लाभ उठाएँ।

विशेष जानकारी: मोतियाबिंद सर्जरी के साथ-साथ भारतीय लेंस की सुविधा के लिए मरीज को अपने खर्चे पर
* बालाजी हॉस्पिटल
* लायन्स हॉस्पिटल
पहुंचना पड़ेगा, पर सर्जरी और भारतीय लेंस निशुल्क रहेगा।

स्वस्थ रहें, जागरूक रहें।
आपकी सेहत – हमारी प्राथमिकता।

निवेदक
पिंकी कुंडू, महासचिव
केके छाबड़ा उपाध्यक्ष
सुनीता शर्मा सचिव
अभिषेक राजपूत सचिव

मैट्रिक परीक्षा शुरू हो गई है। विभिन्न केंद्रों और बोर्ड कार्यालयों का दौरा कर परीक्षा प्रबंधन की निगरानी आयुक्त-सह-शासन सचिव ने की

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

भुवनेश्वरः राज्यव्यापी वार्षिक हाईस्कूल सर्टिफिकेट परीक्षा 2026 शुरू हो गई है। माध्यमिक शिक्षा परिषद (बोर्ड) द्वारा यह परीक्षा 19 फरवरी से 2 मार्च तक आयोजित की जाएगी।

परीक्षा के पहले दिन, स्कूल और जन शिक्षा विभाग के आयुक्त-सह-शासन सचिव डॉ. एन. तिरुमाला नायक ने भुवनेश्वर में विभिन्न परीक्षा केंद्रों का दौरा किया। उन्होंने कटक स्थित बोर्ड के मुख्य कार्यालय का भी दौरा किया। डॉ. नायक ने सभी परीक्षा प्रबंधन तैयारियों, जैसे कि बैठने की व्यवस्था, सुरक्षा व्यवस्था, प्रश्न पत्र वितरण व्यवस्था और अन्य सुविधाओं की समीक्षा की। उन्होंने शिक्षकों, केंद्र अधीक्षकों, पर्यवेक्षकों और जिला अधिकारियों के साथ चर्चा कर समन्वय और परीक्षा निर्देशों का कड़ाई से पालन करने के निर्देश दिए। उन्होंने परीक्षा को शांतिपूर्ण तरीके से संचालित करने पर भी जोर दिया।

इसी तरह, विभागीय शासन सचिव ने माध्यमिक शिक्षा परिषद के कमांड कंट्रोल रूम का दौरा कर परीक्षा प्रबंधन की समीक्षा की।

शीर्षक - मॉं कहती है

बच्चों पढ़ो तुम मन लगाकर,
मॉं कहती है हमें ये अक्सर,
तुम हो साहसी ताकतवर,
भगाओ परीक्षाओं का डर ।

परीक्षाएं जीवन का हिस्सा,
मत बनाओं भय का किस्सा,
तुम्हारी मेहनत का ये शीशा,
दिखाती है तुम्हें सही दिशा ।

नहीं कदम उठाना नुकसानदेह,
जहॉं हो कोई भी प्रश्न या संदेह,
गुरुजनों से पूछो तुम निडर स्नेह,
तुम ₹आनंद₹ से भरपूर नि:संदेह ।

ईमानदारी से करो तुम पढाई,
अध्ययन में हो रूचि गहराई,
नित्य मेहनत ने तकदीर बनाई,
शिक्षा ने ही किस्मत चमकाई ।

त्याग दो परीक्षाओं का डर,
मत दो तन-मन को ये ज़हर,
भय को मत दो हवा भीतर,
तुम पर करता सब निर्भर ।

- मोनिका डागा "आनंद"
आपके स्नेह और प्यार का धन्यवाद
रचना स्वरचित और सर्वाधिकार सुरक्षित

आर्थिक विकास आकलन...!

भारत दुनिया की चौथी सबसे बड़ी हैं अर्थव्यवस्था,
घरेलू खपत, सुधारों व तेज आर्थिक वृद्धि अवस्था।
भविष्य में देश 'तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था' का दर्जा,
यह मुकाम हासिल होगा इसमें नहीं कोई भी हर्ज़ा।

आर्थिक विकास के आंकड़ों से जुड़े हुए आकलन,
पैमाने में 'महंगाई' को स्थिर करें पहलू के संकलन।
एक तरफ विकास की चमकती हुई तस्वीर हैं पेश,
दूसरी तरफ महंगाई की स्थिति बयां नया परिवेश।

इस वर्ष के शुरूआत में ही महंगाई में हुई बढ़ोतरी,
खाद्य सामग्री एवं जरूरी वस्तुओं के दाम चढ़ोतरी।
महंगाई का सबसे ज्यादा असर गरीब व मध्य वर्ग,
भोजन, ईंधन व स्वास्थ्य का सरकार समझ लें दर्द।
(संदर्भ-आर्थिक विकास के दावे तेज।)

संजय एम तराणेकर
(कवि, लेखक व समीक्षक)
इन्दौर-452011 (मध्य प्रदेश)

गिरफ्तारी के दौरान नियमों का पालन न करने पर हाई कोर्ट नाराज़: गिरफ्तार आरोपी को ज़मानत मिली, DSP ने माफ़ी मांगी

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा

कटकः हाई कोर्ट ने उस घटना पर नाराज़गी जताई है जिसमें एक पुलिस अधिकारी ने एक व्यक्ति को गिरफ्तार करते समय कानून के नियमों का पालन नहीं किया। हाई कोर्ट ने नाज़िम मलिक को ज़मानत दे दी है, जिसे मलकानगिरी ज़िले के पोडिया पुलिस स्टेशन में गैर-कानूनी मारिजुआना तस्करी के मामले में गिरफ्तार किया गया था। हाई कोर्ट ने मलकानगिरी स्वतंत्र कोर्ट को आवेदक को 1-1 लाख रुपये के दो ज़मानत के बदले ज़मानत पर रिहा करने का निर्देश दिया है। जस्टिस गौरीशंकर सतपथी की बेंच ने नाज़िम की रेगुलर ज़मानत अर्ज़ी पर सुनवाई के बाद यह आदेश दिया।

दूसरी ओर, मामले के जांच अधिकारी और पोडिया पुलिस स्टेशन के तत्कालीन DSP रामेश्वर प्रधान वर्चुअली पेश हुए और बयान देकर माफ़ी मांगी। उन्होंने अपने लिखित बयान में गाली-गलौज और अश्लील भाषा के इस्तेमाल के लिए माफ़ी मांगी थी। उनका ऐसी भाषा का इस्तेमाल करने का कोई इरादा नहीं था। हलफ़नामे में कहा गया है कि वह भविष्य में सावधान रहेंगे। हाई कोर्ट ने एफिडेविट स्वीकार कर लिया और उसे भविष्य में सावधान रहने और ऐसी घटनाओं को दोबारा होने से रोकने की चेतावनी दी।

हाई कोर्ट ने कहा कि कानून के नियमों के अनुसार, गिरफ्तार किए गए व्यक्ति को उसकी गिरफ्तारी के बाद और कोर्ट में पेश होने से काफी पहले उसकी गिरफ्तारी के कारणों के बारे में बताया जाना चाहिए। गिरफ्तार करने वाला ऑफिसर गिरफ्तार व्यक्ति को उसकी गिरफ्तारी के कारणों के बारे में ऐसी भाषा और स्क्रिप्ट में बताने के लिए बाध्य है जिसे वह समझता और पढ़ सकता है। संविधान के आर्टिकल 22(1) के अनुसार गिरफ्तार व्यक्ति को उसकी गिरफ्तारी के कारणों के बारे में लिखकर बताया जाना चाहिए। BNS के सेक्शन 47 के अनुसार गिरफ्तार करने वाले ऑफिसर को उसकी गिरफ्तारी के कारणों के बारे में बताया जाना चाहिए।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023